CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

11·2

भोजपुरी महाकाव्य—'बउधायन'

विद्वानों की दृष्टि में

संयोजक

डा० महेन्द्रनाथ राय

प्राध्यापक,—हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी महाकाव्य—'बउधायन'

विद्वानों की दृष्टि में

संयोजक

डा० महेन्द्रनाथ राय

प्राध्यापक,—हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

प्रकाशक :

वाराणसी परीक्षा संस्थान

एस० २/४०२–५ सिकरोल (भोजूबीर तहसील रोड)

वाराणसी,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'बउधायन' महाकाव्य रचयिता

महाकवि, दण्डि स्वामी विमलानन्द सरस्वती

वाराणसी ।

मुद्रक : अजय प्रिन्टर्स कजाकपुरा वाराणसी—१

मूल्य—दो रुपये

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'दो शब्द'

दण्डि स्वामी श्री विमलानन्द सरस्वती द्वारा प्रणीत 'बौद्धायन' भोजपुरी भाषा एवं साहित्य का मानक ग्रन्थ है। ऐसे महाकाव्य शताब्दियों की प्रतीक्षा के बाद किसी मनीषी साहित्यकार द्वारा रचे जाते हैं। भगवान गौतम बुद्ध के व्यक्तित्व, विचारधारा एवं दर्शन को समूचे ऐतिहासिक-सांस्कृतिक और सामाजिक परिवेश में काव्यात्मक ढङ्ग से वाणी देने का सत्प्रयास एक युगांतकारी कार्य है जिसे स्वामी जी ने लोक-भाषा में सम्भव बनाकर अन्य परिनिष्ठित भाषाओं के साहित्य को एक चुनौती दी है। यह महाकाव्य इतिहास, काव्य एवं दर्शन का ऐसा संगम है जिसमें अवगाहन करने वाले का आन्तरिक तमस, मालिन्य असद् वृत्तियाँ नष्ट होंगी तथा अन्तर अहिंसा, करुणा, प्रेम, क्षमा जैसे उदात्त मूल्यों से परिपूर्ण होगा। मूल्य-वोध के इस संकट के युग में ऐसे महाकाव्य की अत्यन्त आवश्यकता थी।

प्रकाशन के पूर्व सहृदय समीक्षकों ने इस ग्रन्थ को पढ़कर जो सम्मितियाँ भेजी हैं उनके संकलन का अभिप्राय यह है कि इस वृहद महाकाव्य को पढ़ने के पूर्व इसकी विषय वस्तु विचार धारा एवं उद्देश्य से सामान्य पाठक परिचित हो सकें। यह महाकाव्य भोजपुरी अकादमी विहार से प्रकाशित हो रहा है। जिन लोगों ने इसके प्रकाशन में अपना अमित सहयोग दिया है वे सभी भोजपुरी भाषा भाषी जनता के स्नेह एवं अभिनन्दन के पात्र हैं। विशेष रूप से पण्डित हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय' निर्देशक भोजपुरी अकादमी जो इसके शीघ्र प्रकाशन के लिए कृत संकल्प हैं, धन्यवाद के सत्पात्र हैं। साथ ही श्री सकल नारायण सिह् ने इस सम्मति-पुस्तिका को शीघ्र प्रकाशित करने में जो तत्परता दिखाई है उसे भी विस्मृत नहीं किया का सकता। श्री रामवचन राय जी तो इतने निकट के हैं कि उनके सहयोग पर कृतज्ञता ज्ञापन समीचीन नहीं जान पड़ता।

—महेन्द्रनाथ राय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१. 'बउधायन'– भोजपुरी का 'इलियड'।

"बउधायन"

यद्यपि बिहार में शिक्षा का माध्यम हिन्दी है, किन्तु मातृभाषा के रूप में वहाँ तीन प्रमुख भाषाओं, मैथिली, मगही और भोजपुरी का जनता में मुख्य रूप से व्यवहार होता है। इन तीनों भाषाओं में भी जन-संख्या एवं विस्तार की दृष्टि में भोजपुरी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। भोजपुरी केवल बिहार में ही नहीं अपितु उत्तर प्रदेश के एक बड़े भूभाग में मातृभाषा के रूप में व्यवहृत होती है। यह अन्तर्राष्ट्रीय भाषा है क्योंकि अपने क्षेत्र के बाहर हिन्दी महासागर के अफ्रीका के पास से कई द्वीपों—मारीशस, सूरिनाम ब्रिटिश गाइना, त्रिनिडाड एवं नेरोबी आदि स्थानों में भी, उसके बोलने वाले निवास करते हैं। भोजपुरी लगभग आठ करोड़ लोगों की भाषा है। भोजपुरी में प्राचीन साहित्य का प्रायः अभाव है, किन्तु उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से इसमें उद्‌बोधक राष्ट्रीय गीतों एवं काव्य ग्रन्थों का प्रणयन प्रारम्भ हो गया था और आज तो इसमें साहित्य की सभी विधाओं में रचना की जा रही है।

यह हर्ष का विषय है कि श्री विमलानन्द सरस्वती ने इस भोजपुरी भाषा में 'बउधायन' नामक महाकाव्य का प्रणयन किया है। यह महाकाव्य २१ सर्गों तथा १५२५ पृष्ठों में सम्पन्न हुआ है। यह रचना कवि के दस वर्षों के अनवरत परिश्रम का परिणाम है।

भोजपुरी के टकसाली गद्य एवं पद्य के लेखकों में श्री स्वामी जी का स्थान सर्वोपरि है। संन्यास लेने के पूर्व उन्होंने सुमन' नामसे जो कतिपय कहानियाँ लिखी थीं उनका संग्रह एवं प्रकाशन 'जेहल के सनदि' के रूप में हुआ है, और यह रचना भोजपुरी गद्य के उत्कृष्ट नमूनों में से हैं। स्वामी जी द्वारा रचित 'बउधायन' (बौद्धायन) आदि काव्य वाल्मीकि और ग्रीक के 'इलियड' की भाँति भोजपुरी भाषा का प्रथम महाकाव्य है।] यह प्रसन्नता की बात है कि हमारा ध्यान लोकभाषा के विकास की ओर भी जा रहा है। मेरा विश्वास है कि लोक संस्कृति की वाहक लोक भाषाओं में भी उत्तम ग्रन्थों की रचना होने से भारतीय आत्मा का वास्तविक स्वरूप उभरेगा।

प्रस्तुत महाकाव्य "बउधायन" लोकनायक भगवान बुद्ध के जीवन पर आधारित है। भगवान बुद्ध का स्थान विश्व के महापुरुषों में है। श्री दण्डि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी विमलानन्द सरस्वती ने इस महापुरुष के जीवन पर 'बउधायन' (बौद्धायन) महाकाव्य की रचना कर अपनी लेखनी को सफल बनाया है। श्री सरस्वती जी एक अनन्य विद्याप्रेमी हैं। संस्कृत पालि तथा हिन्दी पर इनका असाधारण अधिकार है।

इन्होंने अपने इस विशाल ग्रन्थ की रचना कर भोजपुरी साहित्य के भण्डार में अभूतपूर्व श्रीवृद्धि की है। भगवान बुद्ध के जीवन की छोटी से छोटी घटना को भी बड़े सुन्दर एवं काव्यात्मक स्वरूप प्रदान करके इन्होंने भोजपुरी भाषा की अद्‌भुत सेवा की है। इस ग्रन्थ से सामान्य जनता में न केवल भगवान बुद्ध के 'सत्य-अहिंसा' के महान संदेश का प्रसार होगा, बल्कि उन्हें इसमें अपने राष्ट्र की महान विभूति के जीवन की सम्पूर्ण घटनाओं का स्पष्ट चित्र भी मिलेगा।

यह ग्रन्थ रस, अलंकार एवं छंद आदि की दृष्टि से भी हर तरह से, प्रशंसनीय है और यह न केवल भोजपुरी साहित्य के ग्रन्थों में अपितु हिन्दी के ग्रन्थों में भी अद्वितीय स्थान पाने योग्य है। इसका एक शब्द भी काटने लायक नहीं है।

मैं इस बात की अत्यन्त उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा करता हूँ कि यह ग्रन्थ प्रकाशित रूप में शीघ्र उपलब्ध हो और इसका प्रचार-प्रसार हो। बुद्ध के जीवन की अनेक महत्वपूर्ण घटनाएँ बिहार की भूमि में ही घटित हुई हैं और आज भी वहाँ उनके जीवन की अनेक स्मृतियाँ विद्यमान हैं। बिहार में भोजपुरी भाषा का क्षेत्र भी विशाल हैं। अतः मुझे पूरी आशा है कि बिहार सरकार इस अमूल्य ग्रन्थ के महत्व को स्वीकार करेगी और इसके प्रकाशन के लिए हर तरह से सहायता प्रदान कर रचयिता के परिश्रम को सार्थक बनायेगी।

(डा०) उदय नारायण तिवारी
एम०ए०डी० लिट् अवकाश प्राप्त
प्रोफेसर, औलोपी बाग
इलाहाबाद-६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२. भोजपुरी का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य

—डा० कृष्णदेव उपाध्याय

बिहार की भाषाओं में भोजपुरी का स्थान प्रमुख है। इस भाषा में बोलने वाले देश और विदेश दोनों में पाये जाते हैं।

भारत वर्ष के अतिरिक्त भोजपुरी भाषा मारिशस, फीजी, ट्रीनीडाड़ सूरिनाम, ब्रिटिश गाइना आदि देशों में भी वहाँ के भारतवंशी लोगों के द्वारा मातृभाषा के रूप में बोली जाती है। इसके बोलने वालों की संख्या दस करोड़ के आसपास है। इस प्रकार यह भाषा सच्चे अर्थों में एक अन्तर्राष्ट्रीय भाषा है। जन संख्या की दृष्टि से विचार किया जाय तो हिन्दी को छोड़कर भोजपुरी भाषा भाषियों की संख्या इस देश में सबसे अधिक है।

भोजपुरी में सन्त साहित्य की रचना प्रचुर मात्रा में हुई है। परन्तु दुःख है कि अभी तक इसका साहित्य प्रकाश में नहीं आया है और मठाधीशों के मठों में वेठनों में वन्द पड़ा हुआ है। भोजपुरी में लोक साहित्य का अनन्त तथा अक्षय भण्डार भरा पड़ा है जिसमें अभी तक कुछ ही सहस्त्र लोकगीतों का प्रकाशन हो सका है। इसकी तुलना समुद्र के एक बिन्दु से ही की जा सकती है।

यह अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि भोजपुरी के वर्तमान कवियों और लेखकों ने इसके साहित्य की अभिवृद्धि की ओर ध्यान दिया है और अनेक महाकाव्य, खण्डकाव्य नाटक, संस्मरण आदि लिखे जा रहे हैं।

'बौधायन' नामक महाकाव्य की रचना का श्रेय दण्डी स्वामी विमला नन्द सरस्वतो को प्राप्त है। स्वामी जी भोजपुरी के जानेमाने कवि, लेखक और विद्वान हैं। ये कवि होने के अतिरिक्त भोजपुरी के प्रथम कहानीकार भी है जिनका 'जेहल कऽ सनदि' नामक कहानी संग्रह आज से पचीसों वर्ष पहले प्रकाशित हो चुका है।

बौद्धायन भोजपुरी भाषा का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य है। श्रेष्ठता के अतिरिक्त विशालता में भी यह अद्वितीय है। यह ३१ सर्गों में लिखा गया है। तथा इसकी हस्तलिपि १५०० पृष्ठों में समाप्त हुई है। भोजपुरी भाषा के विद्वान डा० उदय नारायण तिवारी ने इस महाकाव्य की तुलना ग्रीस देश के महाकवि होमर के अमर काव्य 'इलियड' से की है। मेरी सम्मति में यह महाकाव्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विशालता में संस्कृत के महाकाव्य 'हेर विजय' के समान है। इसकी रचना भिन्न तुकान्त छन्दों में की गई है। इस महाकाव्य के अधिकांश भाग को स्वयं कवि के मुख से मुझे सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। अतः मैं अधिकार पूर्वक यह कह सकता हूँ कि इस काव्य की रचना अत्यन्त सुन्दर तथा सरल बन पड़ी है। पदशय्या सुष्ठु है तथा शब्दों का चयन बड़ी चातुरी से किया गया है। इस महाकाव्य के विभिन्न स्थलों में सुन्दर तथा सरस वर्णन उपलब्ध होते हैं। बुद्ध के महाभिनिष्क्रमण के वर्णन में करुणरस की धारा प्रवाहित होती है।

परन्तु 'बौद्धायन' की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह महाकाव्य होने के साथ ही साथ दर्शन शास्त्र का भी ग्रन्थ है। इसके अतिरिक्त बौद्ध धर्म के प्रचार के इतिहास का विवरण भी इस ग्रन्थ म बड़े ही प्रामाणिक रूप में प्रस्तुत किया गया है। बौद्ध धर्म के प्रधान चार धार्मिक सम्प्रदाय हैं। इन चारों सम्प्रदायों के दार्शनिक सिद्धान्तों का विवेचन इस ग्रन्थ में बड़ी ही प्रामाणिकता से किया गया है। विद्वान लेखक ने इस सिद्धान्त का वर्णन एक दार्शनिक तत्ववेत्ता के रूप में किया है। इस प्रकार बौद्ध धर्म तथा दर्शन की जानकारी के लिये यह महाकाव्य अत्यन्त उपयोगी है।

(परन्तु इस महाकाव्य में जो वस्तु मुझे सबसे अधिक महत्वपूर्ण ज्ञात होती है वह है भारत के बाहर, विदेशों म, बौद्ध धर्म के प्रचार तथा प्रसार का रोचक विवरण।) इतिहास के विद्वानों की यह ज्ञात ही है कि सम्राट अशोक ने किस प्रकार अपने पुत्र महेन्द्र और प्रिय पुत्री संघमित्रा को सुदूर श्री लंका भेजकर बौद्ध धर्म का प्रचार किया। किस प्रकार शान्त-रक्षित तथा परमार्थ आदि बौद्ध भिक्षुओं ने चीन, तिब्बत तथा सुदूर पूर्व में, उस अतीतकाल में, समुद्र मार्ग में यात्रा कर बौद्ध धर्म की विजय वैजयन्ती को वहाँ फहराया था। यह भारतीय इतिहास की एक अमर कहानी है। (स्वामी विमलानन्द सरस्वती ने अपने इस प्रस्तुत महाकाव्य में चीन, जापान, लंका, वर्मा, जावा, सुमात्रा, कम्बोडिया, तिब्बत अर्थात् 'ग्रेटर इण्डिया' अथवा वृहत्तर भारत में बौद्ध धर्म के प्रचार एवं प्रसार का बड़ा ही प्रामाणिक, रोचक तथा विस्तृत वर्णन प्रस्तुत किया है।

इस प्रकार महाकाव्य में काव्य; दर्शन तथा इतिहास की त्रिवेणी प्रवाहमान दृष्टिगोचर होती हैं। श्री विमलानन्द सरस्वती जी केवल कवि के ही रूप में नहीं बल्कि एक दर्शन तत्ववेत्ता तथा इतिहासकार के रूप में भी हमारे सामने आते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इतिहास, दर्शन तथा काव्य का एकत्र समन्वय होने के कारण यह महाकाव्य अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। सर इडविन आर्नाल्ड के 'लाइट आफ एशिया' से इस महाकाव्य का क्षेत्र अत्यधिक विस्तृत है। हिन्दी में तो क्या किसी भी भारतीय भाषा तथा अंग्रेजी में भी ऐसा ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है : इसकी रचना के लिए स्वामी जी भोजपुरी जनता के धन्यवाद के पात्र है। इस ग्रन्थ के प्रकाशन से भोजपुरी साहित्य की नितान्त अभिवृद्धि होगी इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है।

डा० कृष्णदेव उपाध्याय
वाराणसी
अध्यक्ष
भू. पू. अ० भा० भोजपुरी-साहित्य-सम्मेलन
पटना।

शब्द सस्ते हो गये हैं, कसौटियाँ कोमल हो गयी हैं।
और मूल्यांकन कूड़े का ढेर हो गया है। उस पर लगे
फूल प्लास्टिक के हैं। हम ऐसे अभिशप्त युग में हैं
कि उन्हें ही कल्पवृक्ष मानने को विवश हैं।

३. सशक्त रचनाएँ : कमजोर रचयिता

डा० विवेकी राय

जी हाँ, रचयिता के कमजोर होने की बात मेरे जैसे लोग 'भी' करते हैं; बल्कि यों कहिए, मेरे-जैसे लोग 'ही' कर सकते हैं। आपको हैरानी हो सकती है। लेकिन मुझे पूरा यकीन है, मैं सच कह रहा हूँ। माना कि हर प्रकाशक की अपनी तमाम तरह की सीमाएँ होती हैं और कभी-कभी उन सीमाओं से आगे जाकर भी वह कुछ काम करने की सोचता है। लेकिन क्या आपने यह नहीं देखा कि सीमा के बाहर भी एक सीमा होती है और उसके बाहर वह नहीं जा सकता। लेखक के लिए आवश्यक हैं कि वह इन सीमाओं के भीतर अपने को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर दे। पहली सीमा प्रख्यात लेखकों की, दूसरी सीमा कुछ नये लेखकों की। तीसरी सीमा अभी नहीं बनी। क्या आपने नहीं देखा कि इस तीसरी सीमा के लिए शेष असीम लेखकों की भीड़ प्रकाशन-जगत में धक्के खा रही है? यह कमजोर रचयिताओं की भीड़ है। इनके पास सशक्त रचनाएं भी हैं। मगर, इससे होता क्या हैं? ये पहुंच-हीन, सोपान-हीन और दूर-फिके दुर्बल रचयिता प्रतिमा घिसकर खप जाती है। इनकी अपेक्षाओं को क्या कोई अस्वीकार कर सकता है? आप भी स्वीकार करते हैं क्योंकि वे वाजिब हैं। फिर आप कह सकते हैं, थोड़े-से अच्छे प्रकाशकों द्वारा दे सबकी सब पूरी हो जायें, यह भी असम्भव नहीं तो बड़ी कठिन बात है। वेशक बहुत कठिन बात है। हर कमजोर रचयिता को पहले यह गुमान होता है कि अपनी सशक्त रचना के बल पर इस कठिनाई को पार कर लेगा, सशक्त रचयिताओं की कतार पा लेगा और तब उसकी कमजोर रचनाएं भी चलती रहेंगी। लेकिन कितने सफल हो पाते हैं? वास्तव में मोरचा इतना बिखरा हुआ है कि कहाँ-कहाँ लड़ें? सशक्त रचयिताओं की कतार पा लेना क्या हंसी-खेल है? श्रेष्ठ प्रकाशक का बल ही पूरा नहीं। मित्र समालोचकों की पत्र-पत्रिकाओं की दाद भरपूर मिलती रहे, विशाल पाठक-वर्ग आकर्षित करने के लिए हल्लागुल्ला, गोष्ठी, चर्चा के अतिरिक्त बिक्री-व्यापार का पहलू, फिर लेखक का स्थान-बल, कोर्स, सोर्स, फोर्स के फैक्टर और सब मिलाकर ऐसा आन्दोलनी आयाम कि लेखक एकदम उछलकर सिद्धनाम हो जाय। कितना विकट मोर्चा हैं?

सूत्र वाक्य की भाँति इस प्रकार के वाक्य का टुकड़ा आगे खिसकाया जा सकता है कि कमजोर रचयिता के पास सशक्त रचना नहीं हो सकती। बात बहुत ऊँचे आदर्श के शिखरों पर की हो गयी। नीचे व्यावहारिक घाटियों में देखा यह गया हैं कि शुरु-शुरु में हर सशक्त रचना का रचयिता कमजोर बनकर भटकता है। मैं बहुत अधिक नहीं, चुने हुए थोड़े नाम सामने रखूँगा। पर्लबक की विश्वविख्यात रचना 'द गुड अर्थ' की पाण्डुलिपि स्वयं लेखिका ने रद्दीखाने में फेंक दिया था। रचयिता तब रचना तो शशक्त थी किन्तु रचयिता कमजोर रहा। श्री श्यामनारायण पाण्डेय का अत्यधिक लोकप्रिय महाकाव्य 'हल्दीघाटी' वर्षों तक, बावजूद अपनी समस्या शक्तिमत्ता के, रचयिता की कमजोरी के कारण प्रकाशन प्रतिष्ठानों द्वारा उपेक्षित रहा। जब कवि की शक्ति का विस्फोट कवि सम्मेलन के मँच से हुआ और उसने अभूतपूर्व ख्याति अर्जित कर ली तो रचना ऊपर उठी। मोहनलाल महतो 'वियोगी' के कथा काव्य 'आर्यावर्त' को पढ़ा तो एक बार लगा था, रचयिता कमजोर रहा। उसकी सशक्त रचना दब गयी। लोग क्षमा करेंगे,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक नाम और लूंगा : जानकीबल्लभ शास्त्री भी सशक्त रचनाओंवाले कमजोर रचयिता निकले। यह बात नहीं कि उन्हे प्रकाशक नहीं मिले। छायावादी कवियों में उन्हें वह स्थान नहीं मिला जिसके वे सहज अधिकारी हैं। प्रकाशक की कमी तो सियारामशरण गुप्त को नहीं थी। पर कौन मानेगा कि वे मैथिलीशरण गुप्त से श्रेष्ठ कवि थे। आरम्भ में बड़े भाई का रचयिता सशक्त था। भले ही उसकी रचनाएँ कमजोर थी। यही प्रभाव आगे काम करता गया और छोटा भाई दब गया। रचयिता के कमजोर होने का प्रभाव जब इतने ऊँचे स्तर पर भी दृष्टिगोचर होती है तो नये-नये मैदानों में आये भौचक्के नये लेखकों की परेशानी की कल्पना की जा सकती है। अक्सर इस प्रकार का रोना अच्छे-भले लेखकों के मुँह से भी सुनते हैं : प्रकाशक अच्छा नहीं मिला, आलोचक नहीं मिले अथवा लोगों ने पढा नहीं और रचना उठी नहीं। मैं कहना चाहूंगा, रचयिता कमजोर था। एक से एक बढ़िया गेटअप और छपाई-सफाई के नयनाभिराम नटवरों में नव-प्रकाशित किताबें का ज्वार आ रहा है। पर कुछ हाथ लगने वाली कृतियों को देखकर मन कड़ुवाहट से भर उठता है। क्यों प्रकाशक ने पैसा पानी में फेंका। उत्तर मिलता हैं, लेखक सशक्त है। आलोचक हाथों-हाथ ले रहे हैं। उद्घाटन, गोष्ठी, परिचर्चा, फिल्मायन, पुरस्कार और नाना प्रकार के शक्ति केन्द्र सक्रिय हैं। शब्द सस्ते हो गये हैं। कसौटियाँ कोमल हो गयी है और मूल्यांकन कूड़े का ढेर हो गया हे। उस पर उगे फूल असली नहीं प्लास्टिक के हैं। हम ऐसे अभिशप्त युग में पैदा हुए कि उन्हे ही कल्पवृक्ष मानने के लिए विवश हैं।

गाजीपुर—जैसे पिछड़े पूर्वी उत्तरप्रदेश के गाँवनुमा छोटे शहर में रहकर प्रकाशन-जगत् की राजधानी में रहने-वाले लेखकों के प्रति ईर्ष्या होती है। कैसे धड़ाधड़ छपते चले जा रहे हैं? कैसी बीहड़ प्रतिद्वन्द्विता है? उसके स्थान-बल के ट्रम्पकार्ड से दूरदराज के लोग हार जाते हैं। रचनाएं अपने रचयिताओं पर रोती हैं। जिस देश के करोड़ों-करोड़ पिता अपनी सन्तानों को उचित विकास-सुविधा प्रदान करने में अक्षम हैं उस देश के अगणित लेखक अपनी मानस-सृष्टि को लेकर रोते रहें, क्या आश्चर्य है? (उस दिन वाराणसी के शिवालाघाट मठ पर एक दुबले-पतले तेजस्वी सन्यासी से मुलाकात हुई। उन्होंने अपना ३१ सर्गों का एक विशाल महाकाव्य दिखाया 'बौद्धायन' और लगभग ४० हजार पंक्तियों के इस अद्‌भुत महाकाव्य को देखकर मैं दङ्ग हो गया। मुझे लगा, महाकाव्य के साथ-साथ यह बौद्धधर्म का विश्वकोष हो गया है, क्योंकि तत्कालीन इतिहास, धर्म, दर्शन, विभिन्न दार्शनिक विवाद, विदेशों में बौद्धधर्म का प्रचार, विश्वयात्रियों का विवरण और सब के केन्द्र में महात्मा बुद्ध का जीवन चरित्राङ्कन!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फिर यह सब हुआ है **परिनिष्ठत** लोकभाषा भोजपुरी में, सत्रह जिलों के दस करोड़ बोलनेवालों की अन्तर्राष्ट्रीय भाषा, सिद्धों, सन्तों और लोक-कवियों की की भाषा में। स्वामी विमलानन्द सरस्वती ने दस वर्षों में लगभग दस घण्टे रोज श्रम करके इस महाकाव्य को सँवारा है।) मैंने पूछा, 'कुछ प्रकाशन-प्रयत्न हुआ ?' तो उन्होंने कहा, 'बस मेरी सामर्थ्य का अन्त लिखने तक था। प्रकाशकों के यहाँ कोई पहुँच नहीं।' मैंने मन में सोचा, रचयिता कमजोर पड़ रहा है। लोकजीवन की भाँति लोकभाषा की इस उपेक्षा के युग में ऐसी सशक्त रचनाएँ बस बस्तों में पड़ी रह जायँ, क्या आश्चर्य ? आज की स्थिति में तुलसी-जायसी भी होते तो शायद हालत बहुत खस्ता रहती। विमलानन्द जी सन्यासी न होकर **यायावरीय** आधुनिकता के झण्डा बरदार होते और पत्र, प्रेस और प्रकाशकों से जुड़े होते तो शायद किसी लोकभाषा में नहीं लिखते। बुरा हो मार्केट वैल्यूज का! गम्भीर चीजें छप नहीं रही हैं। छपती हैं तो बिकती नहीं। प्रकाशक चटखारे माल के पीछे भाग रहे हैं। स्थिति यहाँ तक बदली कि सबसे सशक्त रचयिता 'गुलशन नन्दा' हो गये! 'बबूल' लिखकर मेरी भी कम दुर्गति नहीं हुई। मेरी वही शिकायत रह गयी, 'पढ़ा नहीं गया!' एक तो उसमें काँटे ही काँटे थे, क्योंकि समाज के अन्तिम गरीब आदमी को चित्रित किया गया था। दूसरे उसके शिल्प में एक प्रयोग कर दिया गया था। नये आदमी में इतना साहस ? एक आलोचक 'दिनमान' में उस पर एकदम टूट पड़ा और डेढ़ कालम की समालोचना में उसने कुछ भी उठा नहीं रखा। उसने माना ही नहीं कि यह भी कोई किताब है। सन् १९६२-६३ में भारत-चीन की लड़ाई हुई। सन् ६५-६६ में भारत-पाक युद्ध हुआ। युद्ध के दौरान खूब लिखा। कहानियों में युद्ध की पूरी रोमांचकता और पूरे इतिहास को बाँधा। नये से नये शिल्प-प्रयोग का सहारा लिया। सभी रचनाएँ एक दैनिक पत्र में प्रकाशित हुईं। पाठकों ने हाथों-हाथ लिया। अगणित प्रशंसा पत्र आये। बाद में उन्हें सहेज-बटोर कर उत्तर प्रदेश सरकार के प्रकाशन-विभाग को दिया। आफिस पर आफिस पार करती, रिकमेण्डेशन पाती पाण्डुलिपि जब अन्तिम टेबल-मुनि के पास पहुँची तो वे देखकर चौंक उठे : 'यह कौन आदमी है ?' और यह अस्वीकृत होकर लौट आयी। कुछ लोगों ने बताया, यदि 'जोर' लगाया होता तो 'सीमा की आग' छप गयी होती। पर जोर कहाँ था ? लेखक कमजोर था! उसके बाद आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का एक भाषण पढ़ा—'इतनी बड़ी-बड़ी लड़ाइयाँ लड़ी गयीं और हिन्दी में इन पर आधारित कोई साहित्य नहीं।—'फिर साहस जागा। एक प्रसिद्ध प्रकाशन-प्रतिष्ठान को दिया। न्याय की पूरी डेढ़ वर्ष बाद पाण्डुलिपि लौट आयी। लिखा था, 'बिक्री की सम्भावना बहुत कम।' फिर वही बात

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सामने आयी। सोचा, अभी रचयिता कमजोर है। और अब तो उसे ताला लगाकर बक्स में बन्द कर चुका हूँ।—मेरे जैसे लेखकों की, जो हिन्दी की शायद ही कोई श्रेष्ठ पत्र-पत्रिका बाकी हो जिसमें वह न छपा हो, भारतीय ज्ञानपीठ; राजकमल प्रकाशन-जैसी नामी प्रकाशन-संस्थाएँ जिसकी कृतियाँ प्रकाशित कर चुकी हैं, यह हालत है, तो सोचना ही पड़ता है,—रचयिता अभी कमजोर है!

—पुस्तक परिचय से जून १९७३

४. बौद्धायन एक महत्वपूर्ण ग्रंथ

यों तो भोजपुरी साहित्याकाश में सतत् साहित्य-सेवा-संलग्न सैकड़ों साहित्यकार नक्षत्रवत् प्रकाश फैला रहे है, परन्तु उनमें स्वामी विमलानन्द सरस्वती का अन्यतम स्थान है। जिस समय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन की सभाओं में भी भोजपुरी बोलने में लोग संकोच करते थे, उस समय स्वामीजी का भोजपुरी कहानी संग्रह 'जेहल कऽसनदि' प्रकाशित हुआ। यह रचना उनकी मौलिक कृति है, जिसका प्रकाशन सन् १९४८ ई० में हुआ। 'जेहल कऽसनदि' भोजपुरी भाषा के माध्यम से लिखी कहानियों की सबसे पहली पुस्तक है। उसके देखने से पता चलता है कि उसका लेखक अनुभवी और मंजी हुई लेखनी का धनी है।

स्वामीजी की सबसे महत्वपूर्ण रचना 'बौद्धायन' अभी अप्रकाशित है, यद्यपि स्वामीजी ने उसके लिखने और संवारने-सुधारने में पूरा एक युग लगा दिया है। इसी से उनकी उक्त कृति का महत्व स्पष्ट हो जाता है। 'बौद्धायन' में कुल ३१ सर्ग हैं, जिससे उसका वृहत्-काय होना भी स्पष्ट है। उसका वृहत्-काय केवल बात का बातूल उठाने से नहीं प्राप्त हुआ है, बल्कि उसमें समाज, संस्कृति, दर्शन, इतिहास और काव्य-तत्व सम्बन्धी विविध विषयों का समावेश सहज-भाव से किया गया है। सच पूछा जाय तो उक्त ग्रन्थ बौद्ध-साहित्य, बौद्ध-दर्शन, बौद्ध-धर्म के विकास का इतिहास और भगवान बुद्ध के जीवन-वृत्त रूपी पंचतत्व से निर्मित बौद्धकालीन भारतीय संस्कृति का साक्षात् शरीर अथवा बौद्धकालीन विश्वकोश है। यह अपने ढंग का अकेला ग्रन्थ है। जहाँ तक मुझे ज्ञान है, हिन्दी-साहित्य में भी इस प्रकार का कोई काव्य ग्रन्थ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नहीं है, जो बौद्धकालीन संस्कृति पर काव्यात्मक ढंग से इतना विशद प्रकाश डालता है। भोजपुरी में इसका प्रकाशन भोजपुरी के महत्व में चार चाँद लगाने वाला होगा। इसे आकार-प्रकार और विषय-विवेचन की दृष्टि से भी भोजपुरी का महाकाव्य कहा जा सकता है।

बौद्धायन का अवलोकन किया। यह ग्रन्थ अपनी सुविस्तृत परिधि में सम्पूर्ण बौद्ध-संस्कृति तथा वृहत्तर भारत को समेटे हुए है। इतिहास, दर्शन और काव्य की यह महत्वपूर्ण त्रिवेणी जिज्ञासु अध्येताओं के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है, जिससे भोजपुरी की श्री-वृद्धि हुई है।

भगवान् बुद्ध के अवतार की भी वही पृष्ठभूमि है, जो श्री रामावतार, श्री कृष्णावतार तथा अन्य अवतारों के सम्बन्ध में कही जा सकती है जैसा कि कथित काव्य के रचयिता का कथन है—

उठलि लहरिया बड़ी भयावनि,
पाप समुन्दर बढ़ल फंफाइल।
डगमग करे धरम कऽ नइया,
परलि चकोह भंवर में।

— — — —

भगतन के दुरदशा देखिई,
डहकल, रोवल जार-बेजार।
दयासिन्धु कऽदिलवा पसिजल
बहल नेह कऽधार।। (सर्ग १)

फिर तो भगवान् का बौद्धावतार होता है और देखते-देखते सारा दृश्य बदल जाता है। अमावस्या का अन्धकार खिसक चला। उषा-काल की अरुणाभा, दिशा-दिशा में फैलने लगी और तब?

उरुआ मइया खोंढरा धइलन,
चमगादुर भुसहुल कऽकोना।
ठगल बार के ठगई भागलि,
सीदति काटि साधुता जागलि,
उड़सल जादू-टोना।
कपिलवस्तु में चक्का ऊगल,
जुग क ऽ सूरुज चमकि उठल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उस समय सब मनुष्य व्यक्तिगत लाभ-लोभ से ग्रस्त केवल अपनी-अपनी चिन्ता करनेवाले, क्षणिक स्वर्ग की कामना से यज्ञ में निरीह पशुओं का हनन करनेवाले तथा पाखण्ड मार्ग परगमन करने वाले हो रहे थे। बुद्ध ने धर्म का मर्म खोलते हुए कहा—

बहत जात धारा में, दुखी तरानी के जे,
ना बहरीं कइ सके जतन से,
ओके वीर पुरुष जनि जानी।
संपति से जे, तिरपित कइल गरीबन के ना,
ओकरा के जनि दाता मानीं (सर्ग १५)

मन की शुद्धि धर्म से होती है। धर्म दान सब दानों में उत्तम है। जिस कुल के लोग धर्म मार्ग पर चलते हैं, वही कुल श्रेष्ठ है। धर्म ही सुखशान्ति का देने वाला है। कलह अधर्म है; सुख-शान्ति के मार्ग में बाधक है—

'मनवा शुद्ध धरम से होला'
अत:--:'सब दानन में धरम दान उत्तम ह ऽ।'

कलह लड़ाई मन-मुटाव से,
ना त सुख आ-शान्ति मिले ले,
नाहीं होला धरम पुन्नि कुछ। (सर्ग २८)

जहाँ-जहाँ संवाद कराया गया है, वहाँ-वहाँ नाटकीयता का दर्शन होता है। अनेक स्थलों पर मानव जीवन की विभिन्न स्थितियों का मनोहर चित्रण हुआ है, बुढ़ापा का एक चित्र---

पाकल बार दांत कुल टूटल,
कान सुनसुना बतिया।
गइल आंखि के जोति
थकलन ठेहुन पहुँचा।

भावों के मानवीकरण का एक दूसरा मार्मिक चित्र—

टिसुना नई जवानी पवलसि,
चमकि-झमकि के मटकी मारे।
कले-कले मुसकाय
मउअतिरानी पहिरि चुनरिया।।
काजर कइले राग कढ़ावे
चुसगे चइके ले। (सर्ग २)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्थान-स्थान पर प्रकृति-चित्रण और ऋतुओं का वर्णन भी सुन्दर ढंग से किया गया है। उषाकाल के आकाश का एक दृश्य—

अइसन नील कसीदा काढ़ल
दइबी तम्मू आसमान के
सुघर, सोनहुला, लाल गुलाबी,
जहवां सोभत बाड़न लाखन
किसिम-किसिम क ऽ फूल।

प्रसंगानुसार रसों का परिपाक और सहज भाव से उपमा, उत्प्रेक्षा रूपक तथा शब्दालंकारों की छटा दर्शनीय है। शरीर-दुर्ग, टिशुना-हाथी समय-सिपाही सन्यास-स्रोत, बुद्ध-चन्द्र आदि रूपकों को देखकर गोस्वामी तुलसीदास याद आ जाते हैं।

विषय और कथावस्तु की दृष्टि से तो कथित ग्रन्थ का महत्व है ही भाषा की दृष्टि से भी इसका विशेष महत्व है। आदि से अन्त तक इस ग्रन्थ की भाषा प्रसादगुण पूर्ण और सहज रूप से प्रवाहित है। भाषा सरस, मुहावरेदार और लोकोक्तियों से गूँथी हुई है यथा—

'साहतर वेंद चहंड़ि के फेंकत
झोंकत मतलब का भरसाईं।
भेंड़ि बनाइ नूंड़ि लोगन के
डालत जीवन अफतरा।'

इस ग्रन्थ के रचयिता ने दर्शन जैसे कठिन तथा इतिहास जैसे विषय को काव्य का रूप देकर सरस-सुग्राह्य बना दिया है, यह भी कम महत्व की बात नहीं है। इसका प्रकाशन भोजपुरी के विकास मार्ग में एक आवश्यक पग है, जिसे भोजपुरी के हितेच्छुओं को पहले उठाना चाहिये इसमें सन्देह नहीं कि 'बौद्धायन' भोजपुरी की एक अनमोल निधि है।

(कुलदीप नारायण राय 'झड़प'
लिलकर, बलिया (उ० प्र०)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

५. 'बउधायन' एक आश्चर्यकारी महाकाव्य

प्रो० ब्रजकिशोर

कविता में रोज लिखी जाती हैं, काव्य रचे जाते हैं लेकिन कालजयी काव्य युगों बाद उतरते हैं ठीक अवतारों की तरह। 'संभवामि युगे-युगे..........' के संकल्पधारी ईश्वर के समस्त भाव जब एकीभूत होते हैं तो एक 'रामायण' लिखी जाती है, एक 'कामायनी' आती है। लोकप्रिय महाकाव्यों की सर्जना सहज संभाव्य नहीं है। यों भी आज का युग संक्षिप्तता की ओर, क्षिप्रता की ओर और लघुता की ओर भागने का है। जो दृष्टिगोचर है, एक अकल्पित भय के वशीभूत अन्यत्र भागने की जल्दबाजी में ही—जल्दी कुछ कहता, कुछ सुनता, नजर आता है। युग के अनुरूप ही आजकल महाकाव्य ना के बराबर ही लिखे जाते हैं—लेकिन ऐसे समय में भी यदि कोई पन्द्रह सौ पृष्ठों का विशालकाय महाकाव्य रच डाले तो क्या आप उसके असीम धैर्य पर दंग नहीं रह जायेंगे? आदरणीय विमलानन्द सरस्वती का यह महाकाव्य 'बउधायन' एक ऐसा ही महाग्रन्थ है, जो आपको कई आश्चर्यों में एक साथ डाल देगा।

भोजपुरी एक सशक्त भाषा है और इसमें अभिव्यंजना की असीम शक्ति एवं सम्भावनायें निहित हैं। तीन दशकों से इसमें जिस गति से साहित्य रचना हो रही है, वह प्रशंसनीय है और उससे भोजपुरी का भाषायी रूप तेजी से निखरता जा रहा है। इसके रूप का जादू किसी एक दिशा में नहीं वरन् हर दिशा में, हर विधा की अप्रतिम सुस्वादु चासनी के साथ बोलता नजर आता है। 'बउधायन' जैसा महाकाव्य हिन्दी में नहीं भोजपुरी में लिखा गया है और यह लिखा जाना आकस्मिक नहीं है वरन् एक सुविचरित निर्णय के अनुरूप है। 'मानस' अवधी में है तो यह 'बउधायन' भोजपुरी में। भोजपुरी जैसी सशक्त और विकासशील भाषा में, जिसके स्वरूप का मानवीकरण अभी शेष है, 'बउधायन' जैसे गूढ़-दर्शन का प्रतिपादक एवं विश्लेषक काव्य लिखा जाना अपने आप में निश्चय ही एक अति आश्चर्य का विषय है। यह काम स्वामीजी की लेखनी से ही सम्भव था, जिसकी नोंक से स्वामी जी के अतुल अध्ययन से प्राप्त बौद्ध दर्शन के सभी पहलुओं के सांगोपांग चित्र उकेरे गये हैं।

भगवान बुद्ध भारतीय मनीषा के एक अत्यधिक उदात्त महापुरुष हैं, जिनका स्थान संसार के इने-गिने महापुरुषों में है। हिन्दू-दर्शन ने तो उनके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दर्शन को न केवल मान्यता दी है, वरन् तथागत को ही अपने दशावतारों में शुमार कर लिया है। इसी से बुद्धि के विभूतिमय अमिताभ चरित्र का आकलन किया जा सकता है। बौद्ध दर्शन ने सदियों तक असंख्य लोगों को विभोर रखा है। यह दर्शन अपने आप में काफी जटिल और विवादों से भरा है। स्वामी जी ने बौद्ध-दर्शन का बड़ा विशद विश्लेषण प्रस्तुत किया है—अपने 'बउधायन' में। यह विश्लेषण उनके संन्यासी जीवन की अनुभूतियों के आलोक में सहज बोधगम्य बन गया है। हिन्दी में भी अत्युच्च दार्शनिक ग्रन्थों खासकर महाकाव्यों की संख्या नगण्य है। भोजपुरी में इस महाकाव्य की रचना तो वस्तुतः स्तुत्य है और इन दार्शनिक तथ्यों को उजागर करते समय काव्यत्व की कोमलता एवं तन्निहित माधुर्य को समेटे रखना सचमुच में एक आश्चर्य है।

स्वामी जी ने छोटी-से-छोटी घटनाओं को भी इस महाकाव्य ग्रन्थ में बटोरा है लेकिन वे सबकी सब चमकते स्वस्थ दानों की तरह हैं जिनकी ढेर देखकर किसान अपने खरिहान से उमगता आँगन तक लौटता है और फिर आँगन से खेतों की मेड़ पर मिट्टी की सोंधी गमक सूँघ-सूँघ कर तृप्त होता है। कथानक का ऐसा मार्मिक गुम्फन और उस पर भोजपुरी माटी की मह-मह महक स्वामी जी के बूते की ही बात थी। जब यह महाकाव्य प्रकाशित होगा तो यह 'सुगन्ध' सचमुच आश्चर्य की सृष्टि करेगी।

इतिहास, दर्शन, कथानक, रस छन्द और अलङ्कार-सबकी दृष्टि से बेजोड़ यह ३१ सर्गों में समाप्त महाकाव्य प्रकाशित होकर सबको आश्चर्यचकित कर देगा। ऐसे ही मानक ग्रन्थों के प्रकाशन से 'सत्साहित्य' की समृद्धि होती है। और साहित्य अपने 'क्रान्तदर्शी' 'युगद्रष्टा' रूप को प्राप्त कर शाश्वतता अङ्गीकार करता है। स्वामी विमलानन्द सरस्वती का 'बउधायन एक ऐसा ही कालजयी ग्रन्थ सिद्ध होगा, जिसे पढ़कर सदियों तक लोग लाभान्वित होंगे और भारतीय मनीषा के उत्कर्ष से चमत्कृत होते रहेंगे।

ब्रजकिशोर

सम्पादक, 'भोजपुरी कथा-कहानी'

प्रकाशन-मन्त्री,

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य-सम्मेलन,

पटना-१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

६. बउधायन : भोजपुरी के गौरव-ग्रंथ

भोजपुरी त्रैमासिक 'अंजोर' का अक्टूबर १९६० वाला अंक में दण्डि-स्वामी विमलानन्द सरस्वती जी के 'वउध लीला' नामक प्रवंध काव्य के धारा-वाहिक रूप में प्रकाशन के श्री गणेश भइल रहे। अपना कृति का वारे में 'अजोर' का ओही अंक में लेखक के ई फूटनोट छपल बा---

'भगवान बुद्ध के अवतार कब आ काहें भइल, अवतार भइला पर कइसे उहाँ का समाज के सुधार कइलीं-एह बाति के विचार करके प्रवंध काव्य का रूप में ७० पन्ना के एगो पोथिये रचलि बा। ई कविता ओही किताबि से कले-कले 'अजोर' में छपी जवन अवैं परकास में लोग का आंखि का अंजोरा नइखे आइलि।''

नव वरिस अगते के ईकहनाम जे बुद्ध भगवान पर उहाके १७० पन्ना के एगो प्रवंध काव्य लिखले वानीं आजु खातिर सही रहल। 'अंजोर' के सहायक संपादक का नाते वमरा एह जानकारी से अपार अगरहट होता कि अबहीं दसां वरिस पूरा ना भइल तवले ओह घर के अजगुत रचना के आकार बीसगुना से भी वेसी बढ़ गइल। स्वामीजी का हाथे एगो वेजोड़ कार हो गइल जेकरा खातिर भोजपुरी मूँह से नेह रखनिहार लोग उहाँ के बड़हन उपकार मानी।

ई कम आनन्दकारी अविमो नइखे जे काया में बढ़ती का साथे-साथ 'वउध लीला' के पुकारो अव 'बउधायन' का नया नांव से हो रहल बा! जवना भारतीय भाव-विभार रूपी 'धर्मचक्र' के पइसार नदी-नारा-जंगल पहाड़ धाङण्त-लांघत सागर-महासागर के पार-उपार ले होखल ओकरा के चलवनिहार ओह महापुरुष के चरन रहे जिन्हि 'तेजले जवानी में भवन दुख देखि के संसार के। हिमालय का तरिआनी में अवतरित जवन राजकुमार सिद्धार्थ, गौतम, बुद्ध होत-होत महाबोधिसत्व का नांव से भगवान मानल गइलें उनुकर आऊ आकर्षण जे होखे, सबसे वड़ा खूबी ई रहे कि ऊ आसमान के ना तकले, माटी के अपनवले। माटी का वोली के मोल-महातम समुझि-वूझि के पाली प्राकृति के गले लगवले।

वैदिक धर्म का नाव पर 'वेद वैचिके, रिति-मुनियन के नांव हंसा के (लोगवा) जब निपटै बउराइलैं तब धरम-रथ धंसल पाक में। 'सोना-चानी का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

टुकरा पर, भइल जिनिगिया जब सउदा' 'टिसुना लता पनफि के तोपलशि सगरै डहरि अन्हार' आ कुछ लोग 'लैंचत धरम ईमान, ग्यान के सुरूपी से जरि खोदत रहे; साहतर बेद चहंड़ि के फैंकत, झोंकत मतलब का भरसाई 'आ मेड़ि बनाई मूड़ि लोगन के डालत जीव अफनरा' ओही घरी' कपिलवस्तु में चक्का ऊगल 'आ' जुग के सूरज चमकि उठल।'

'जब-जब होइ धरम के हानी 'बाढ़हि असुर महा अभिमानी' तब-तब भगवान के अवतार धरती पर से पाप का भार उतारे खातिर मानल गइल वा। संस्कृत भाषा वाली तालाबन्द सनूक में से रामावतार आ कृष्णावतार के कथा निकालि के सरेआम, सम का सोझा, खुलासा रखगिहार गोसाईं तुलसीदास आ महात्मा सूरदास अपना 'अवधी' आ' ब्रजा' का 'भाषा-मनिति' से चतुर गवाँर, मरदे-मेहरारू, लड़के-बड़ सैयान समे के जिया जुड़वले। पाली का पिटारा में धइल बुद्धावतार गाथा गावँ का भार भी बुझला कवानो घर बासी ना, साधुए संन्यासी का हाथ के सहार जोहत रहल हा तवै त गेरुवा बस्तर आ त्रिदंड धारी स्वामी विमलानन्द सरस्वती जी का वैरागी मन में एह खातिर अनुराग जागल। सचहूं सार्थक हो गइल हमनी के मातृभाषा भोजपुरी जेह में अपना मूँड पर के अवतार भगवान बुद्ध के बिमल चरित आ विशाला धर्मोपदेश के वखान वाला वृहत ग्रन्थ 'वउधायन' रचाइल हा। सदियनि से चलल आवत करोड़न लोगन का जवान के मान—मरजाद एह महाकाव्य का होती से आसमान छू रहल बा, ई कहल वेजाई ना होई। असल में राम, कृष्ण आर बुद्ध के ले के अवधी, ब्रजी आ भोजपुरी के आपन आपन सरूप लजागर होखही के रहे। 'रामचरित मानस' आ सूरसागर का तरे 'वउधायनो' के आपन विशेषता बा। जइसे 'सूरसागर' में कृष्ण-लीला आ भक्ति भाव भरल राग-रागिनि निवाला छंद-विधान में 'पद' के सिरिजना जमुना का कछार में बइठल एकबारा पर सुर-सधनिहार ज्ञानचक्षु सूरदास जी का हाथे होखल, जइसे नाना पुराण निगमागम जननिहार गोस्वामी जी सरजू तट पर सहज सुबोध दोहा-चौपाई वाला सुगम 'ठाट' में रामचरित मानस के पाठ बन्हलीं, का औइसवीं बक्सर महातीर्थ आ काशी महाधाम वाली गंगा मइया का तरिआनी का बीचे रमनिहार दण्डिस्वामी विमलानन्द जी पुरान परिपाटी के छान्ह-बान्ह हटावत बुद्धचरित आ बौद्धधर्म का क्रांतिकारी उद्घोष का अनुरूप मुक्त छन्द में 'वउधायन' के विशाल काम मण्डप नइखीं उठा देले ? संउसे भोजपुरीये क्षेत्र में ना, बलुक उत्तरी भारत का भाषा-मयवध में 'वउधायन' के ऊँच पीढ़ा मिली एह में इचिको अनेसा नइखे। अपना आकार-प्रकार, प्रवाह-प्रखरता आ प्रभविष्णुता में अब ले प्रकाशित भोजपुरी गद्य-पद्य ग्रन्थन मध्ये

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सरस्वती जी के ई सारस्वत सुवृति अद्वितीये ना, अनमोल बा। एह में भाषानुरूप भाषा-निछक्का ठेठ भोजपुरी-के अभूतपूर्व प्रयोग पन्ने-पन्ने ना वलुक पाँति। पाँति में मिलता। ढेरि ना बस एगो नमूना भर देखि लीहल जाउ। हिमालय का तराई में के झरना के ई चित्र कतना मनोरम बा—

झिर-झिर झरना
गुनगुनात
अठिछातकले कल
कवहीं सरकत;
ढेग बढावत
थिरकत
गातो सुर में गप्वत
आवत;
माई भगीरथ के
चरन छुवै के

ध्वनि अनुकरण (आंनो मेटोपिया) अलङ्कार भरल अइसन-अइसन कतने उदाहरण एह कृति के सोमनउक बना रहल बा। भोजपुरी के गौरव-ग्रन्थ 'वउधायन' के समुचित समादर होखे के चाँहीं।

अविनाशचन्द्र विद्यार्थी
शिवाजी पथ, यारपुर
पटना–१

✳

७. भोजपुरी कऽ सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य

(चतुरी चाचा)

भोजपुरी में छोटि छोटि चुनमुनवा कवितन के रचना त खंचियन लउकति बाड़ी सन। वाकिर दबीज आ देंहिगर प्रवन्ध—के गिनती अंगुरिये पर गिने भर बाड़ी सन। दण्डी स्वामी विमलानन्द सरस्वती के लिखल 'बौधायन' ओही लरि के एगो बहुते टाँठ आ चुहिलगर कड़ी बा, जेवन अबहीं ले, छपाई का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अभाव में अपना डेढ़ हजार पन्नन के दमगर देहिं घाजा समेत बेठन में बान्हल कुलबुलात आ कहरत बा। एह महाकाव्य में ३१ गो सर्ग बाड़न स जेवना में भगवान बुद्ध के जीवन लीला का साथै-साथ बौद्धधर्म आ दर्शन, ओकरा प्रचार आ फइलाव के रोचक कहानी होइल गइब बा, जेवना में ऐतिहासिक तथ्यन के प्रामाणिकतो के भरिसक प्रयास कइल गइल बा।

भोजपुरी के नामी गरामी त्रैमासिक पत्रिका 'अंजोर' का अङ्कन में ढेर दिन ले 'बउध लीला' शीर्षक से 'बौद्धायन' के कई गो सर्ग छपलन हँसन। बाकीरं चटनी का चिखला से भरपेटा संतोख त मिली ना, 'बौद्धायन' के सोगहग सरूप में खातिर मन लुलुआइले रहि जात रहल है। 'बौद्धायन' के सोगहग सरूप में सहजन आ नीक-नोहर सिरजना देखि के अगरइली-घघइली, मन निहाल भइल। ऊ हो केवनो दूबर-पातर नाहीं, हजारन पन्ना का घमधूसर देहिं घाजा में।

पतरेंगवा, सिंकिया पहलवान जइसन दूबर पातर देहिंवाला दण्डी स्वामी का कलमि से अइसन भारी-भरकम, गरहू आनकि नगद भोजपुरी महाकाव्य के सिरजना अपना ढङ्ग के एगो अकेले कहल जाई। अइसन सनियल सिरजना जेकर सानी सहजेना भेंटा सके। वड़ा तप से त अइसन डरैह होला, एमें इचिको सन्देह न इखे, सुभाव से बौद्ध, कर्म से दण्डी देहिं से दूबर आ दिमाग में घमधूसर, लोक से सन्यासी-विरागी बाकिर लोक भाषा से अनुरागी ई सम विरोधाभास रहती दण्डी स्वामी विमलानन्द जी सरस्वती का जिनिगी के आपन अलगा विशेषता बाड़ी सन।

दण्डी स्वामी विमलानन्द जी सरस्वती हिन्दी का साथे-साथ भोजपुरी के एगो अगड़धत आ धाकड़ विद्वान हई। इहाँ का अपना धुन के धनी, बरत-नेम निबहनिहार आ टेक के कबो ठेक ना लागे देवे वाला अइसन तेजस्वी साहित्यकार हई जे बराबर भोजपुरी के एक सुरा अलख जगावत फिरल। हमारा इयादि बा, जवना घरी लोग भोजपुरी बोले आ लिखे में झिझिके, केहू तरे कि कुछु लोग भोजपुरी गद्य लिखे खाति। जबले कागज कलम खोजत रहे तबले सन् १९४८ में स्वामी जी ले आके 'जेहल क सनदि' आगा धइ दिहली आ भोजपुरी के अइसन अगहर 'ऊढ़ी' कामन कई दिहलीं कि आजु ले ओकर एड़ ना मराइल। हमरा एही बाति के पुरहर विसवाव बा कि जहिया 'बौधायन' अपना सजल सँवरल रूप में पाठकन का हाँथ में आ जाई तहिया एह 'ऊढ़ी' के घराठा ना रही 'एह सेसर सिरजना के कते सानी ना मेंटाई' सिहाए के परी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपन-आपन टिसुना। किसन भगवान के लीला भूमि ब्रज का ब्रजी में सूरदास सूरसागर लहखलें, भगवान रामचन्द्र के जन्मभूमि अवध का अवधी में रामचरित मानस रचि के गोस्वामी तुलसीदास जी जन-मन में भगवान राम का प्रति भक्ति भाव जगा के आपन मानसा पुरवत मानस निरमल कइलीं। एही पुसला पुर नियम के आदर्श स्वामी जी का शोभा, बा। भगवान बुद्ध के जन्म आ तपस्थली का भाव से भींजल भोजपुरी में 'बौद्धायन' जइसन अनमोल महाकाव्य के सिरजना दण्डी स्वामी विमलानन्द जी सरस्वती जइसन धीर-धुरंधर, नीति निपुन विद्वान, तपस्वी पंडित आ क्रान्तिदर्शी-मनीषी कवि का खेमाता के बाति रहलि हवे।

हमरा ई कहत इचिको आहस नइखे कि 'बौद्धायन' भोजपुरी के एगो गौरव ग्रन्थ होखी। भाषा आ भाव से पौढ़ एक महाकाव्य में भगवान बुद्ध का जिनिगी के सगरी लीलन के सौतुक बरनन त बटले बाटे ओमे ऐतिहासिक तथ्यन का साथे-साथे बौद्धधर्म आ दर्शन का बारीकियन के बड़ा सरस आ रोचक गुनावन भइल बा। स्वामी जी के निछक्का भोजपुरी उहाँ का भाषा में जान आ जोर भरता, बहता पानी निरमला मतिन स्वामी जी के भाषा उहाँ का विचार के धार देतिया।

बौद्धधर्म एगो उदार, क्रान्तिकारी आ विशाल धर्म रहे। चीन, जापान, जावा, सुमात्रा, तिब्बत, कम्बोडिया, लंका वगैरह ले दुनिया का कोना में एकर सोरि पसरल रहे। "बौद्धायन" में दण्डी स्वामी विमलानन्द जी सरस्वती एकर प्रमाणिक वर्णन बड़ा रोचक ढंग से कइले बानी। भगवान बुद्ध खुदे एगो धार्मिक क्रान्ति ले के अवतार ले-ले रहलन। फेस क्रान्तिकारी सुभाव के कवि काहे नाहीं महाकाव्य का पुरनकी परम्परा में एगो नई क्रान्ति कई के देखा देउ? कवि बन्हल—बन्हावल लीकि से हटाइ के कविता केछंद मुक्त कइ देले बा। जेवन भोजपुरी खातिर एगो नया प्रयोग बाटे। महाकाव्य का शब्दन में चाहे ऊ प्रकृति के चित्रण होखे चाहे, छपिटात मन में जिनिगी के ऊ म—चूम होखे समतर शब्दन में कसाव आ आपन एगो कमाल बा, जेवन अंगूली में जड़ल नगीना नियर चम चमात बा।

स्वामी जी का एह प्रयास खातिर भोजपुरी साहित्य उनुकर ऋणी रही, हमरा पूरा विश्वास बा। भगवान का सु जल्दिये पाठकन का "बौद्धायन" के दर्शन होखो।

ह० मुक्तेश्वर तिवारी
डा० मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध'
पी० एच० डी०
(चतुरी चाचा)
राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित
प्राध्यापक एवं पत्रकार
सदस्य—प्रबर समिति
अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन
२, ईस्ट गार्डिनर रोड,
पटना—१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

८. डा० वसन्त कुमार

श्री विमलानन्द सरस्वती जी के लिखल "बौद्धायन" भोजपुरी साहित्य के एगो अप्रितम महाकाव्ये ना, गौरव ग्रन्थ होखे जा रहता बा। भगवान बुद्ध अपना समय के अइसन महापुरुष भइनी जिनका विचार आ व्यक्तित्व के पुरहर छाप भारतीय संस्कृति में देखल जा सकेला। एही महापुरुष के जीवन आ संदेश पर, आधारित संस्कृत के महाकवि अश्वघोष के महाकाव्य "बुद्धचरित" अपना समय में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति पवले रहे। हमार विश्वास बा जे "बौद्धायन" भी भोजपुरी संसार में ओही प्रसिद्धि आ जस के भागी होई।

डा० वसन्त कुमार
आचार्य एवं अध्यक्ष
राँची विश्वविद्यालय, राँची
सदस्य, भोजपुरी अकादमी

९. बउधायन कऽ विशेषता

भोजपुरी अकादमी के कार्य समिति आ दोसर उप-समितिन के बइठका में "बौधायन" पर खूब सुनले बानीं। भीतरे भीतर दाँते अंगुली दबले कटले बानी की ई महाकाव्य ३१ सर्ग, १५०० पृष्ट में दण्डी स्वामी विमलानन्द सरस्वती जी के एक युग के कठिन तपस्या के प्रतिफल ह। ई का कम अभिमा के बात बा। हमरा भोजपुरी, हिन्दी या अंग्रेजी में अइसन विशाल काय महा काव्य नइखे।

एकर प्रकाशन भोजपुरी के गौरव में चार चान लगाई। मस्तक ऊँच करी आ भोजपुरी के आन पर केहूं आँच लगाई त सीना तानि के कहे में उजुर बा होई कि "बौधान" नीयन महाकाव्य हमरा भोजपुरी में बा आ रउरा……

"बौद्धायन में बौद्ध-दर्शन, विदेशन में बौद्ध धर्म के प्रसार-प्रचार के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रोचक आ प्रमाणिक वर्णन बा। महात्मा बुद्ध के संघर्ष मय जीवन वृत्ति के इतिहास काव्यमय भाषा में बड़ा रोचक बनि पड़ल बा।

"बौधायन" के रचनाकार के, दर्शन हमरा दूवेरि भइल बा। पहिला वेरि सन् 1942 में हाई स्कूल भोजपुर पर जब हम कक्षा 10 वाँ के छात्र रहलीं ओहघरी एक महाग्रन्थ के रचनाकार के नाव रहे अवध विहारी 'सुमन'। उहाँ का भोजपूरी के पहिल का प्रकाशित कहानी संग्रह "जेहल कऽसनदि" ले के प्रसार-प्रचार आ विक्रय खातिर हमनी के स्कूल पर आइल रहली। हमनी के स्कूल के बाराण्डा कनार बद्ध कइल गइल रहे। स्व० चन्द्रदीप लालजी हमनी के प्रधानाध्यापक सुमनजी आ उनुकर किताब "जेहल क सनद" के परिचय देले रहली आ भोजपुरी के उज्वल भविष्य के सपना हम-सव छात्रन के देखवले रहली। भोजपुरी में कहानी के किताव छपल सुनि के बड़ा अगराइल रहलीं। टिफिन में घरे गइलीं आ माई से कहली कोर्स के एगो बहुते जरूरी किताब वेचायें आइल बा आ आजुवे भर मिली, फेन मिलवे ना करी। एह तरह के वहाना बनाके माई से एक रूपया ठगि के ले गइल रहीं आ "जेहल कऽसनदि" के एक प्रति खरीदले रहली। ऊ किताब टोला-टोला घुमला। जे पढ़ल सभे सराहल। फेन औरत समाज में घुमे लागल पढ़े खातिर। पता ना ऊ किताब बाद में केकरा भोजारी लागि गइल। आजु ऊ किताब हमरा भीरी नइखे, बाकी एव संस्मरण से बौधायन के रचनाकार के बनी लेखनी के अनुभव हमरा बा।

दोसरा पेरि दि० 4 फरवरी 1979 के भोजपुरी एकादमी के उदघाटन समारोह के अवसर पर जब दण्डी स्वामी विमलानन्द सरस्वती जी के भोजपुरी के सेवा खातिर विहार के राज्यपाल द्वारा सम्मानित कइल जात रहे। उहाँ के मार्मिक शब्द हृदय के छूवले रहे—"अकादमी के सम्मानित करेवाला चिठ्ठी पढ़ि के हमरा आँखि के आँसू आ गइल। भोजपुरी के आजु ऊ दिन आ गइल। एकरो सेवक सम्मान बौधायन के रचना के सम्बन्ध में स्वामी जी के मुँह से ओह घरी कुछ जानकारी मिलल रहे।

"बौधायन" नीयन वृहद ग्रन्थ के प्रकाशन सरकारी संस्थे कऽसकति बा। ई कवनो एक व्यक्ति के बूँता के बाति नइखे। एकर प्रकाशन कइल भोजपुरी के हित में अच्छा होई। भोजपुरी माई के मुँह उजागर करी। ऊँच पीढ़ा प बइठाई। एह में तनिको सक नइँखे।

रसिक बिहारी ओझा
"निर्भिक"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१०. पं० गणेश चौबेजी की सम्मति

मुझे दण्डि स्वामी विमलानन्द जी सरस्वती के भोजपुरी महाकाव्य बौद्धायन की पाण्डुलिपि देखने और उसे गौर से पढ़ने का सुअवसर मिला है। ऐसे तो कहने के लिए भोजपुरी में अनेक महाकाव्य और प्रवन्ध काव्य हैं, परन्तु मेरी दृष्टि में सही अर्थों में भोजपुरी में कोई महाकाव्य है तो वह स्वामी जी का 'बौद्धायन'।

महात्मा बुद्ध का जन्म और निर्वाण भोजपुरी क्षेत्र में हुआ है, उन्होंने अपने धर्म का सर्वप्रथम प्रचार भोजपुरी क्षेत्र में ही किया। विश्व की इस महान विभूति से भोजपुरी क्षेत्र गौरवान्वित हुआ है और स्वामी जी द्वारा उस महात्मा के चरितगान से भोजपुरी साहित्य 'बौद्धायन' में शृंगार शान्त और करुण रस का उत्कृष्ट रूप हमें देखने को मिलता है। ग्रन्थ विविध अलंकारों से सुसज्जित है, परन्तु बोझिल नहीं। इसका काव्यात्मक सौन्दर्य निराला और मोहक है। बुद्धदेव का उदात्त चरित्र समाज के उन्नयन का प्रेरणा-स्रोत सिद्ध हो सकता है। इसकी भाषा प्रसंगानुसार और प्रवाहमयी है। बौद्धायन स्वामी जी की ग्यारह वर्षों की सारस्वत साधना का मूर्त रूप है। ऐसी अनुपम कृति के लिए मैं स्वामी जी को शत-शत साधुवाद देता हूँ और उत्सुकता पूर्वक इसके प्रकाशन की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

(गणेश चौबे)
उपाध्यक्ष
अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन
एवं
क्षेत्रीय सम्पादक
फौकलोर कलकत्ता।

११. बौद्धायन : एक महनीय कृति

डा० अनिल कुमार आंजनेय

राजगुरुमठ शिवाला घाट वाराणसी के क्षीण वपु सन्यासी दण्डी स्वामी विमलानन्द सरस्वती को वर्षों से जानता हूँ। स्वामी जी के सुमन की सुरभि से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भी विमुग्ध रहा हूँ। मकरन्द (खड़ी बोली की काव्य कृति) जैहल कऽसनदि), (भोजपुरी कहानी संग्रह) भोजपुरी कहानियाँ में धारावाहिक प्रकाशित जिनिगी कऽटेढ़ राहें भोजपुरी उपन्यास और अंजोर को भी अंजोर कर रहे बउधलीला (बौद्धायन के स्फुट अंश) के माध्यम से स्वामी जी की सभो लेखनी के लीला विलास पर लुब्ध हुआ हूँ।

पर उस दिन महाकाव्य बौद्धायन को जो देखा सुना तो स्वामी जी की साधना के इस संग्रथन के प्रति विस्मित एवं श्रद्धाविनत हो गया। तीन दिनों तक अवगाहन पूर्वक इस रत्नोदधि का आलोड़न-विलोड़न करता रहा। रह-रहकर कृशकाय स्वामी जी को निहारता था और फिर बौद्धायन में मूर्तिमन्त उनकी अखण्ड साधना को। स्वामी जी और बौद्धायन को देखकर मुझे स्वामी जी की इस उक्ति का अर्थ स्पष्ट होने लगा, 'रवि मण्डल देखत लघु लगा। उदय तासु त्रिभुवन तम भागा' इसमें सन्देह नहीं कि बौद्धायन में स्वामी जी का तेजोदीप्त हुआ है। और उस दिन. तेजवन्त लघुगनिय न......का सही मर्म स्पष्ट हो गया।

'बौद्धायन' कुल ३१ सर्गों का महाकाव्य (इतिहास) है। स्वामी जी की वैदुष्यपूर्ण गवेषणात्मक भूमिका से भूषित यह महाकाव्य ग्रन्थ कवीनां निकषं वदन्ति को प्रमाण पुरस्सर करता हुआ कृति कवि के ग्रन्थगौरव के अवदान से और भी अवदात हो उठा है।

विषय और कथा वस्तु को भास्वरता प्रदान करने वाली भाषा एवं भावानुरूप रसों के परिपाक, उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक तथा शब्दालंकार की सुष्ठु योजना ने भोजपुरी एवं राष्ट्र भाषा को नहीं कि बहुना भारतीय वाङ्मय को संश्रीकता प्रदान किया है। मनीषी स्वामी जी के ग्यारह वर्षों के स्वाध्याय मनन-चिन्तन-साधना व सुक्ति का यह मुक्ता फल है, बौद्धधर्म, दर्शन-साहित्य संस्कृत इतिहास का यह चिन्तामणि आकिंचन्य को मेटने वाला है। यह चिन्मय चिन्तामणि जिसके प्रति उर करते न खसेंहीं का संकल्प लेना होता है।

साहित्यानुरागी का व्यरसिक उन इस महनीय एवं मननीय कृति के लिए यशोधन कृति स्वामी जी की वदान्यता तथा उनकी कीर्तिदिप्त लेखनी के सदाऋणी रहेंगे।

'गुन ना हिरानो गुनगाहक हिरानो हैं।'

हिन्दी सेवी संस्थाओं और विशेषतमाहम भोजपुरी भाषा भाषी विशाल और विशेषतः हम भोजपुर भाषा भाषी विशाल जन समाज के लिए यह लज्जा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और पश्चाताप का विषय है कि भोजपुरी भाषा की यह अनमोल थाती अब तक उपेक्षित ही है और इस महनीय कृति का प्रकाशन अभी तक नहीं हो पाया। स्थिति है—

'हीरा परा बाजार में रहा छारलिपटाय।
तब तक मूरखि चलि गये पारखि लिया उठाय॥'

पारखी की प्रतीक्षा तो हैं ही, साथ ही ओकरा है निवेदन भी :—

सब काहू का लीजीये सोचा सब्द निहार।
पच्छपात ना कीजिए कहे कबीर बिचार॥

अनिल कुमार 'आजमेय
एम० ए० (द्वय) पी० एच० डी०

१२. 'बौद्धायन' : बौद्ध धर्म आसंस्कृति के अद्भुत दस्तावेज

"वौद्धायन" के सम्पूर्ण अध्ययन—अवलोकन त हम नइखीं कइले एसे सम्भव बा हमरा से कुछ कम वेसी भा उँच नीच कहा जाव, बाकिर ओकर जेतना रूप हमरा वोझा आइल बा, ओकरा आधार पर ई कहे में हमरा इचिको हिचकनाहट नइखे कि "वौद्धायन" इतिहास, परम्परा आ समसामयिकता के नेईं पर खड़ा अइसन विशाल महल बा, जवना के निर्माण आधुनिक दृष्टि से भइल बा। एम्में बौद्ध युगीन धर्म संस्कृति, दर्शन आचार-विचार आ दृष्टिकोण के अइसन मौलिक विवेचन बा कि इ ओह युग जीवन आ जीवन-मूल्यन के दस्तावेज होगइल बा।

गुलदस्ता, फुलवारी आ बगइचा अलग-अलग चीज हउवन स केहू गुलदस्ता में दस-पाँच गो फूल पतई खोसि के छड़िक सौन्दर्य या सुगन्ध के सृष्टि-कर सकेला बाकि फुलवारी या वगइचा तैयार करने में मेहनत आ समय लगेला। फुलवारी में किसिम किसिम के फूले भर होलन स, वाकिर वगइचा में हरएक किसिम के पेड़-पौधा लता आ फूल होलन स बगइचा में गुलदस्ता नियर कसीदा-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कारी आ कलाकारी ना होके एगो सहज सोभाविक सम्पूर्णता होला। यह सम्पूर्णता में रंग-विरंगा रूप रस गन्ध आ विस्तार का बावजूद एकता आ संगठन होला। "बौद्धायन" गुलदस्ता न होके एगो अइसने वगीचा हऽ जवना में रचना शक्ति, मेहनत समय आ साधना लागल बा।

आन्तरिक कसाव आ संरचना के गठन का दृष्टि से "बौद्धायन" में बहुत लोग का सपाट वर्णन आ बोर किस्सागोई लउकि सकेले, बाकिर ध्यान से पढ़ला आ देखला पर एकरा भीतर अनुभूतियन के अइसन बिनावट नजर आइ, जवन यह विशाल महाकाव्य के भीतरी संगति दे रहिल बा। हालाँकि यह संगति में विखराव बा बाकिर ई बिखरावे साइल एकर सबसे खास आ मौलिक विशेषता बा इहो यह वजह से कि "बौद्धायन" गीतिकाव्य" भा "खण्डकाव्य" ना ह।

दण्डी स्वामी विमला नन्द सरस्वती भोजपुरी के धाकड़ हस्ती हउसन "जेहल कऽ सनदि" आ "जिनगी कऽटेढ़ राह" उनका मँजल लेखनी के प्रमाण बा। जे उनका गद्य के जानकार बा, ऊ अनासो उनका काव्य के पँजरा आ जायी। "बौद्धायन" में विनल काव्यानुभूतियन के परताल कइला पर एगो बाति स्पष्ट हो जाई की स्वामी जी के प्रतिभा कवीर नियर ध्वंसात्मक ना होके, तुलसी नियर रचनात्मक बा। "बौद्धायन" मतिन रचना उनका रचना शक्ति के पुरहर प्रमाण बा। स्वामी जी के कवि उग्र या विद्रोही ना होके शान्त आ धीरज सम्पन्न बा।

जइसन कि नाँवे से जाहिर बा "बौद्धायन" भगवान बुद्ध के जीवन चरित्र आ उनका द्वारा संचालित दर्शन के केन्द्र बना के लिखल महाकाव्य हऽ। ई ना त "किरातार्जुनीय" "शिशुपालवध" आ रामचन्द्रिका "नियर अलंकृति प्रधान बा" ना "महाभारत" आ पृथ्वीराज रासो नियर शुद्ध कथात्मक। बलुक "बाल्मीकि रामायण" "रघुवंश" 'नैषधचरित' आ "रामचरित मानस" नियर चरित-प्रधान बा। भगवान बुद्ध नियर महानपुरुष आ क्रान्तिकारी दर्शन के प्रणेता के जिनगी के हरेक पहलु के उजागर करे वाला "बौद्धायन" में महाकाव्य के कुल्हि आधार भूततत्व बाड़न स। महान कथानक, महान चरित्र, महानशैली आ महान संदेश से परिपूर्ण ई ग्रन्थ कुछ ममिला में होमर का "इलियड" आ वर्जिल का "एनीड से भी आगा बढि गइल बा।

"बौद्धायन" ३१ सर्ग में विभक्त आ शृंखलाबद्ध अइसन महाकाव्य बा; जवन "महाकाव्य सम्बन्धी मूलभूत धारणा के, अपना विस्तारे से तोरऽता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ई सर्गबद्ध होइयो के "ईशान संहिता" में द्विहल सर्ग-संख्या के सीमा लावि जाता……………

अष्टसर्गान्नतु न्यूनं त्रिशंगच्चिनाधिकम्
महाकाव्यं प्रयोक्तव्यं महापुरुष कीर्तियुक् ।

अर्थात महाकाव्य आठ सर्ग से कम ना होखे आ तीस सर्ग से अधिका ना होखे ओकरा भीतर कवनों महापुरुष के कीर्ति-वर्णन होखे के चाहीं। होमर के "इलियड" आ -'ओडेसी" में चौबीसे गो सर्ग वाड़न सऽ। पैराडाइज लास्ट आ स्पेन्सर के "फेयरी क्वीन" में बा रहे सर्ग वाड़न स।

पौर्वात्य आ पाश्चात्य दूनो साहित्य शास्त्रियन का विचार से महाकाव्य के जवन एगो सर्वकालिक सर्वमान्यरूप होखे के चाहीं "वौद्धायन में मिल जाई। एकर लमहर कथानक एगो महान युगान्तरकारी पुरुष का जिनगी से जुड़ल बा ई इतिहासिक होइयो के कवि-कल्पना के स्वतन्त्र प्रयोग के हेठ नइखे करत। प्रसाद गुण सम्पन्न गरिमा मयी शैली एह महाकाव्य के गति आ प्रवाह दे रहलि विया। "वौद्धायन" के एगो खास विशेषता इहो बा कि एमे जन-जन हिताय शान्ति दया आ करुणा के आलोक बिखेरत भगवान बुद्ध के "लोकरंजक" रूप के वर्णन बा। आचार्य दण्डी अपना "काव्यादर्श" का पहिला परिच्छेद १९वाँ छन्द में एह लोकरंजक रूप के महाकाव्य कऽ महत्वपूर्ण विशेषता मनले वाड़न।

ऐतिहासिक तथ्यन के प्रमाणिकता का ख्याल से भी "वौद्धायन" भोजपुरी के एगो वेजोड़ कृति विया जवना में भगवान बुद्ध के जीवन-दर्शन के प्रभावपूर्ण आ मर्मस्पर्शी वखान कइल गइल बा। एह वखान में ऊ कूल्हि ऐतिहासिक तत्व आ गइल वाड़न स जवना से वौद्ध धर्म के उदार आ संतुलित रूप के प्रचार प्रसार आ प्रभाव के इचिको वल मिलल बा। एह सृजन-संपादन में स्वामी जी के यु गवोध काबिले तारीफ बा।

"वौद्धायन" के वीजरूप "अँजोर" त्रैमासिक का जरिये प्रकाश में आइल रहे। "अक्तूबर" ६० वाला अङ्क में स्वामी जी का टिप्पणी का साथ "वउध-लीला" शीर्षक से एकर शुरूआत भइल। अठ्ठारह-उन्नीस वरिस पहिले के ई टिप्पणी "वौद्धायन" के रचनाभूमि के समुझे में सहायक हो सकेले—"भगवान बुद्ध के अवतार कव आ कहँवा भइल आ अवतार भइला पर कइसे उहाँ का समाज सुधार कइलीं एह बाति के विचार कइके प्रवन्ध काव्य का रूप में ७० पन्ना के एगो पोथिए रचलि बा।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओह घरी के ई संक्षिप्त रचना कइसे "वौद्धायन" बनि गइल, ई सोचला पर कवि के जीवट-आ रचना-शक्ति के सहजे अनुमान कइल जा सकऽता। हो सकता रचनाकार का मन में ई विचार आइल होखे कि "हम एके भोजपुरी के एगो अपूर्व आ विशिष्ट कृति बना दी" जे होखे बकिर अपना विषय वस्तु (सब्जेक्ट मैटर), विस्तृत ढांचा आ भावबोध का कारन ई भोजपुरी साहित्य में एगो अनोखी (यूनीक) कृति हो गइल बिया एम्मे राजकुमार सिद्धार्थ से बुद्ध आ "महाबोधिसत्व" बने के प्रक्रिया कऽरोचक-प्रामाणिक प्रस्तुतीकरण बा बौद्ध-धर्म आ दर्शन के तात्विक विवेचन का साथे ओकरा फैलाव आ प्रभाव के वर्णन बा। समसामयिक परिवेश आ सस्कृति का साक्षात्कार का दृष्टि से "बौद्धायन" सचहूँ एगो युगप्रवर्तक महाकाव्य बा।

संस्कृत, पालि आ अपभ्रंश का गम्भीर ज्ञान का बिना बौद्ध-धर्म के आंतरिक-ऐतिहासिक मूल्य समुझन कठिन बा। सरस्वती जी सम्भवतः ओह कूल्हि बौद्ध-ग्रन्थन के अध्ययन कइके उन्हनी के पचालेले बाड़न—तब्बे ऊ एके अपना भावभूमि फेरू से रचे में सफल हो सकल बाड़न। अगर अइसन ना रहित त "बौद्धायन" में मौलिकता नाँव के कवना चीझु ना रहित।

मानवतावादी विचारन के संवाहक का रूप में सरस्वती जी के एकहीं धारणा तनी खटकऽतिया; ऊ ह उहाँ के अवतारवाद में विश्वास। श्री राम, श्रीकृष्ण नियर उहाँ का गौतम बुद्ध के अवतार कऽ वर्णन कइले बानी 'पाप-समुद्र' का फफइला से चारू ओर भयावनि लहरि उठलि रहे आ डगमग करत धर्म के नाइ भँवर में परि गइल रहे। अपना भक्तन के दुर्दशा आ उत्पीड़न देखि के दयासिन्धु के हिया पसीज उठल आ उहाँ का कपिलवस्तु में अवतार लिहनी। उहाँ का अवतार लेते धर्म के दिव्य उजाला फइलल, अन्हार के परदा फाटल, अधर्म के आंतक खतम भइल आ दया—करुणा के स्निग्ध धारा बहि निकलल। इहेना—

बीतलि रात, बिहान भइल
सांसि लेत, अगड़ात हिमालय तनिका जोति देखवलसि।
उरुवा भइला खोंढ़रा धइलनि
चमगादुर भुसहुल कऽकोना,
ठग, लबार के ठगई भागलि
सीदति काटि साधुता जागलि
उड़सल जादू-टोना;
कपिलवस्तु में चक्का ऊगल
जुन कऽसूरुज चमकि उठल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एहँ तरे भगवान बुद्ध का देह--धारण से पहिलहीं उनकर अस्तित्व अतना प्रकाशमान रहे कि पूरा परिवेश में परिवर्तन आ गइल। युग कऽसूरज का रूप उनकर उदय भइल। जबकि भगवान बुद्ध एगो साधारण राजकुमार का रूप में धरती पर आपन गोड़ धइलन; वातावरण के देखलन-सुनलन आ ओसे प्रभावित भइलन साँसारिक नश्वरता आ अशाँति से ऊबि के मन क्षुब्ध भइल, एगो अकेला-पन--एगो बैराग--उनका मन में समा गइल आ ऊ सत्य आ शाँति का खोज में निकल परलन। एह खोज --यात्रा में उनका शाँति आ ज्ञान के प्राप्ति भइल, ऊ महाबोधिसत्व जइसन अलौकिक स्थिति में चहुँपि गइलन। तब जाके बौद्ध धर्म मतिन उदार आ मानवतावादी दर्शन कऽ जन्म भइल आ ऊ देश-देशांतर में फइलल --पसरल। कहे के मतलब ई अवतार का लक्षणन से उपरोक्त स्थिति मेल नइँखे खात।

स्वामी जी का रचना--विधान में उनका संवेदनीयता आ कल्पनाशक्ति से समाविष्ट अनुभूतियन के रचाव कऽएगो अलगे महत्व बा। प्रकृति के मनोहारी चित्र उकेरत खा ई संवेदनीयता अउर गहिर हो जातिया। भोरहरी के एगो चित्र देखीं।

जेइसन नील कसीदा काढ़ल
दइबी तम्बू आसमान कऽउ
सुघर, सोनहुला, लाल गुलाबी
जहँवा सोभत बाड़न लाखन
किसिम-किसिम के फूल।

ध्वनि-चित्र आ रूप-चित्र का दृष्टि से भी 'बौद्धायन' में अनेकन गोलाइन मिलि जाई जवना के विवेकसम्मत व्याख्या कइला पर एकर भाषिक रचाव आ ओकर आंतरिक सुघराई खुलिके उजागर हो जाई। ध्वनि आर्वत तऽ 'बौद्धायन' के रचना विधान के एगो खास विशेषता बा :—

शरदरीतु का नील अकाशे। सोलह कला साजि के विहसत
मंगल-विमल चनरमा उगि के सरगलोक से डेग बढ़ावत
अमिरित बरसावत। मिरितलोक मे आवत
साथे साथे हजारन तारा
झूमि--झूमि आँनद मनावत

ईहे ना, 'कामायनी' मतिन भावन का मानवीकरण के अनेकन गो उदाहरण 'बौद्धायन' में मौजूद बा तृष्णा आ मृत्यु के वर्णन करतबा कवि कइसन प्रभावी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भावचित्र उरेहे के कोशिश कइले वा ।

टिसुना नई जवानी पवलसि
चमकि--झमकि के मटकी मारे
कले-कले मुसुकाय ।
मउवति रानी पहिरि चुनरिया
काजर कइले राग कढ़ावे चुरुगे, चहकेले ।

अब आइल जाव छंद पर । 'बौद्धायन' में मुख्यतः मुक्तछंद (फ्री-वर्स) के प्रयोग भइल बा । ई गौर करे वाली बाति विया कि महाकवि निराला मतिन स्वामी जी भी छंदों की छोटी राह, छोड़ि के मुक्त रूप में आपन विचार व्यक्त कइले वाड़न । गति आ प्रवाह खातिर जेतना विस्तार मुक्तछंद में संभव बा ओतना साधारण छंदद में नइखे । स्वामी जी एकर प्रयोग अपना ढंग से कइले बाड़न । कहीं-कहीं त उनका पक्तियन के रचाव-जसाव, ध्वनि साम्य आ सहज अनुप्रास-आवर्त देखि के निराला जी के इयाद आ जातिया :—

'झिर-झिर झरना
गुनगुनात :
अँठिलात कलेकल
कतहीं थिरकत
डेग बढ़ावत
सातो सुर में गावत
आवत
श्री माई भगीरथि के चरन छुवे के ।

पक्तियस के सुगठन आ संबध्दता देखे जोग बा । ओंतरे बौद्धायन के भाषा भले ठेठ भोजपुरी भा 'निछक्का' भोजपुरी होखे बाकिर स्वामी जी भोज-पुरी के संस्कार-परिष्कार करे खातिर ओके प्रभावी आ जानदार बनावे खातिर संस्कृत आ हिन्दी शब्दन के लेवे में परहेज नइँखी कइले ।

'बौद्धायन' मूलतः शांत रस प्रधान महाकाव्य बाः करुण रस एम्मे एकर सहकारी बा, बाकिर अउर रसन के भी एम्में सुघर परिपाक भहल बा । रौद्र, हास्य, वीभत्स, भयानक कूल्हि रसन के उदाहरण एम्मे मिलि जाई । वात्सल्य के अतना प्रभावशाली आ मर्म छूवे वाली पंक्ति बहुत कम जगहन पर मिली—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"प्रिय गउतम क ऽ देखि भेख मुनि-सन्यासी क ऽ।
मन राजा क ऽ बेकल भइल सहज ममतावश।
कंठ रुन्हाइल। बोली बंद। ऊ परि मोह भरम में
ना उनुका के मुनि कहि सकलन
ना कहि सकलन पूत।"

आखिरी पंक्तियन में भावना के चरम उत्कर्ष आ आवेगन के कशमकश देखल बन-ता। ठीक अइसही 'कुमार संभवम्' का नवम सर्ग, में कालिदास पार्वती का मनोवेगन के कशमकश के चित्र खड़ा कइले बाड़न :

तं वीक्ष्य वेपथुमती सरसाङ्गयष्टिः शैलाधिराज तनया न ययौ न तस्थौ।

बौद्धायन में अलंकारन के प्रयोग कतहीं जान-बूझि के कइल गइल होखे अइसन बाति नइखे। अलंकार अनासो अपना सहज रूप में आ गइल बाड़न स आ एहं तरे स्वामी जी के रचना में सहजता आ प्रवाह आ गइल बा। इहे ना, कथा- विन्यास में रोचकता आ प्रभाव (इम्प्रेशन) देवे खातिर 'नाटकीयता के सुघर समावेश कइल गइल बा।

कुल मिला के इहे कहल जाई कि बौद्धायन भोजपुरी-साहित्य के एगो विशाल आ अनोखी [यूनीक] कृति बिया जवन अपना विषय वस्तु, रचना-विन्यास, आ संगतिपूर्ण संरचना का कारन अवश्य मूल्यवान हो गइल बिया। इतिहास, परंपरा आ समसामयिकता के संतुलन से उत्पन्न आधुनिकता एह कृति में निहित सृजनात्मकता के अर्थवत्ता दे रहल बिया। बौद्धायन सचहूं एगो युग, एगो परिवेश, एगो संस्कृति आ विचारधारा के प्रामाणिक दस्तावेज बा।

—डा० अशोक द्विवेदी
संपादक पाती
(भोजपुरी)
मकान परशुराम सिंह, मिढ्ढी
बलिया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विश्ववाङ्ग्मय की सर्वोत्तम उपलब्धिः 'बउधायन'

सद्य प्रकाशनोन्मुख 'बउधायन' के माध्यम से भारत की सर्वाधिक सशक्त जन-भाषा भोजपुरी की अपराजेय ऊर्जा अमिताभ बुद्ध को केन्द्रीकृत कर उस उत्ताल-तरंगिता एवं ऊर्जस्विता के साथ लहरायित हुई है, जिससे सम्वलित-समन्वित हो सहस्राब्द पूर्व कालजयी कबीर की साधु प्रतिभा ने अप्रतिम यशस्विता एवं मृत्युञ्जयता उपलब्ध की थी। प्रतिभा का ऐसा प्रकर्ष दस-बीस-पचीस-पचास वर्षों में तो नहीं ही शताब्दियों के पश्चात भी कठिनता से ही उपलब्ध हो पाता है। काल-मंथन के वैद्युतिक विवर्त्त से निर्गत ऐसी कारयित्री मेधा-मनीषा पर किसी भी भाषा को महिमानुभूति हो सकती है।

सुदूर अतीत से अद्यावधि वृहत्तर विश्व को प्रेरणाप्लावित करने वाले भगवान बुद्ध के सारगर्भ, समुज्ज्वल एवं स्वर्गिक व्यक्तित्व, विचार, वर्चस्व एवं वैलक्षण्य को इतनी महाव्याप्ति, आतलिकता एवं नैबिड्य के साथ वही अनावृत-विवृत कर सकता है जो स्वयं संन्यास-संचिंतन एवं जितेन्द्रियता के अग्निकूट पर आरूढ़ हो पराचेतना के अनन्त-असीम महाकाश को अपने श्वास श्वास पर उत्कीर्ण कर पाया हो और जिसके पास गगन-गामिनी कल्पना, सारग्रह अन्तर्दृष्टि, सव्य भावानुभूति एवं दीप्ति-दृप्ति भाषाभिव्यक्ति भी हो। बउधायन के विराट् वपु में उपरिगत विशिष्टियों की आत्मा ही स्पन्दित हो रही है।

विश्व की अतिशय महिमामयी, यशोधरा त्रिकाल-प्रदीप्ता प्रतिभाओं की सदा-सर्वदा से यही नियति रही है कि प्रथमदृष्ट्या वे परम्परागत रूढ़ियों, मान्यताओं, अभिमानों, गतानुगतिकताओं एवं पूर्वाग्रहों की संकीर्ण चौखटों में सम्यकरीत्या समाविष्ट नहीं हो पाती है। कुछ ऐसा ही भाग्य 'बउधायन' और उसके अभूतपूर्व प्रणेता आगम-निगम-निष्णात महाकवि दण्डी स्वामी विमलानन्द जी का है जिसके चलते इस ग्रन्थ की प्रकाशनानुमति के सन्दर्भ में अनेकानेक विघ्न-बाधाएँ एक के बाद एक कर आती-उतरती रहीं और अन्ततः मार-विजय की भांति उन पर विजय प्राप्त हो सकी है। निःसन्देह, 'बउधायन' विश्व के लिए, विश्व-वाङ्मय के लिए एक अनोखा-अनूठा अवदान है जिसका प्रति-रूप

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अब तक तो नहीं ही, संभवतः कभी भी नहीं उपलब्धि-विषय बन सकेगा। हम दण्डी स्वामी श्री विमलानन्द सरस्वती के प्रति अगाध आभार प्रकट करते हैं, जिन्होंने भारत भूमि की गौरव-गरिमा का यशोवितान सारे विश्व में, भोजपुरी के माध्यम से फहराने का सफल ऐतिहासिक प्रयास किया है।

अंग्रेज राजकवि वर्डस्वर्थ का कथन है कि काव्य मानव हृदय के समान ही अमर हुआ करता है और संत विनोबा के शब्दों में कवि हृदय सम्राट होने के कारण विश्व सम्राट हुआ करता है तथा संत विनोबा के शब्दों में ही 'पत्थर में परमेश्वर का दर्शन करना-कराना काव्य का काम हुआ करता है। फिर अगर यह काव्य आत्मनिष्ठ किंवा आत्मलीन योगी-यती को आश्रित होकर प्रवृत्त होता हो, किंवा करुणा अथवा मुदिताका अवलम्बन कर तरंगित-तरलित होता हो तो वह काव्य-कला, भला, अतुलित समादर-सम्मान का भाजन स्वतः कैसे नहीं बन जाएगी ?

'कौशल्या-हृदय-नन्दन राम को तमाम अवाम की आंखों में आनन्दकन्द, सच्चिदानन्दघन से रूप में अनायास उपस्थापित कर सकने में समर्थ चिन्तामणि डाकू आदिकवि का सेहरा सरे-आम सर पर सजा चुका है और बैर के पेड़ तले जन्मा कृष्णद्वैपायन भगवान वेद व्यास की सम्मान-सपर्या का सार्थक अधिकारी बना करता है। सचमुच नर से नारायण की पदवी तक पहुँचाने वाली अगर कोई विधा सुविधा से संप्राप्य हो सकती है तो वह एकान्ततः काव्यकला ही होगी और अमरता की संजीवनी प्रवाहित करते रहना उसकी सार्वभौम प्रवृत्ति हुआ करती है। तभी तो सन्त तुलसी दास ने रूप से 'नाम' को कहा अधिक सार्थक और शक्तिमान बता रखा है।

राम न सकहिं नाम गुन गाई !!

रूपात्मक उपाधि का चित्रांकन जहां शिल्पी का साध्य-समेध्य हुआ करता वहीं नामात्मक उपाधि का सही समुत्थापन कवि-कर्म कहलाता आया है। और सौन्दर्य शास्त्रीय दृष्टियों से पहला जहाँ 'शिव' है, वहीं दूसरा 'प्रजापति' का पीठासन कबके बनाया जा चुका है। इसलिए 'रूप शिल्पी' जहां 'नयनानन्ददान का उदारतम दाता' बताया जाता है, वहां 'कवि कर्मा' श्रवण-सुखदान के माध्यम से 'आनन्द कैवल्य' का कुशल कल्पक कहा जाता है। यही कारण है कि ईसा से भी लगभग चार शताब्दी पूर्व के महान् यूनानी दार्शनिक अरस्तू ने समस्त कला को अनुकरण मात्र बता रखा है और १८ वीं शती के फ्रांसीसी दार्शनिक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विक्टर काजन ने 'कला कला के लिए' का पक्ष निष्प्रतिपक्ष प्रतिष्ठापित करके दक्षदृष्टिता हासिल कर ली थी। और काजन के समशताब्दीक अंग्रेज कवि पी० बी० शेली ने कवि को विश्व का अस्वीकृत व्यवस्थापक बतला रखा है। यूनानी विद्वानों की चित्रकारी और कविकर्म के बीच का वास्तविक विभेद हजारों-हजार वर्ष पूर्व से परिज्ञात दीखता है, तभी तो ईसा पूर्व छठो शताब्दी पूर्व के प्रख्यात यूनानी कविसिमनडीज ने चित्रकारी को मूक कविता और कविता को बोलती तस्वीर-सा बता रखा है और प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व तक यह मान्यता यूनान में अबोध रूप से चलती देखी गई है। तभी तो रोमन कवि होरेस भी 'चित्र' को 'शब्द रहित कविता' के रूप में व्यक्त विवेचित कर चुके हैं। और विगत शताब्दी के अंग्रेज कवि जान केविल तक यह मान चुके हैं कि शिल्पकला चित्रकला की अपेक्षा काव्य के अधिक निकट हुआ करती है। तात्पर्य यह कि सुन्दरता और हृदयावर्जकता की दृष्टि से चित्र, मूर्ति और काव्य तीनों ही एक ही संवर्ग में बिठाये जा सकते हैं, मगर तीनों में तारतम्य करने पर इनमें उत्तरोत्तर समृद्धि के अनन्त अवदान उभरते हैं। तभी तो भारतीय आचार्यों ने काव्य के मौलिक उद्देश्य साट्कौषिक षाट्-कोटिक बताते हुए निर्माणात्मक परिपूर्णताका एकमात्र पथ प्रशस्त कर रखा है और इस बिना पर यह कहना भी अप्रासगिक नहीं होगा कि कलात्मक संरचना को वाणी प्रदान करने वाला केवल कवि ही हो सकता है—दूसरे नहीं। संवेद्या भावना-सुन्दरी का संवेदक सुन्दर स्वस्थ प्रौढ़ शब्दों के साथ विवाह रचाना ही तो कवि-परिवार का सदा से पार्यन्तिक प्रयत्न रहा है और इस अलौकिक स्वतंत्र-संवित् समायोगात्मक वर-बधू जहाँ समरस होकर 'भांवर' दिया करते हैं, वही मण्डप काव्य कहलाने का आलंकारिक अवसर उपलब्ध करता है। वस्तुतः यही कारण है कि 'दशरथ अजिर विहारी राम' आदि कवि वाल्मीकि का रामायण के "आँगन" में वेद-वेदय परम पुरुष की पूर्वपीठिका रचाते पाए जाते हैं और संत तुलसी के 'रामचरित मानस' में 'जाहि जपत त्रिपुरारि' के रूप में जगह-जगह अवतीर्ण देखे जा चुके हैं। इतना ही नहीं, एकही व्यास के द्वारा रचित महाभारत के "वासुदेव श्रीकृष्ण" में और श्रीमद्भागवत के "भगवान श्रीकृष्ण" में महान् अन्तर भी सुस्पष्ट देखने को मिल जाया करता है और इन आपातिक अन्तरों का भी अंतरुद्देश्य आवश्यकरूप से उपादेयही नहीं उद्-भावनीय भी माना जाता है। ऐसी स्थिति में अगर महाकवि "अश्वघोष" से लेकर 'संन्यासी-प्रवर स्वामी विमलानन्द जी तक की बुद्ध चरित के कवि-गायकों की विशाल-विराट् परम्परा बरकरार है, तो यह न केवल भारतीय वाङ्मय मात्र के लिए प्रत्युत विश्व वाङ्मय के लिए भी समान रूस से सौंदर्य-सौष्ठव में चार चाँद सजाने वाली ही बनती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जहाँ तक भारतीय कवि वाङ्मय का सम्बन्ध है, प्रधानतया दशरूपधारी नारायण वस्तुतः राम, कृष्ण और बुद्ध इस त्रिमूर्ति के रूप में ही बहुमान्य-बहुचर्चित-बहुवर्णित है जिनमें भगवान् राम को मुख्यतः मर्यादा पुरुषोत्तम माना जाता है, भगवान कृष्ण को स्वयम् भगवान-पूर्णावतारी भगवान् तथा भगवान् बुद्धदेव को अनन्य कारुणिक के रूप में स्वीकारा जाता रहा है। साथ ही राम और कृष्ण जहाँ धर्म-संस्थापन के लिए अवतीर्ण हुए बताए जाते हैं, वहीं भगवान् बुद्ध का प्रधान प्रयत्न "धर्मचक्र प्रवर्त्तन" अनुमत-उद्घोषित हो चुका है।

यह भी तत्त्व-दर्शियों के समक्ष सुस्पष्ट हो चुका ही है कि जहाँ भगवान् राम ने वैयक्ति धर्म की रक्षा-प्रतिष्ठा पर बराबर बल दिया, वहीं भगवान् कृष्ण ने राजधर्म को सम्भाला-संवारा और सुसंस्कृत किया। किन्तु दोनों ही भगवानों की धर्म संस्थापना का केन्द्र विन्दु वर्णाश्रम धर्म बना रहा। मगर, इतिहास इस बात का साक्षी है कि भगवान् बुद्ध ने लोकधर्म—लोकाचार—लोककल्याण मार्ग को मुख्य शासन पर बिठाया था। मैत्री, मुदिता, करुणा आदि आत्मिक अतिशायित गुणों की साक्षात् प्रतिमूर्ति भगवान् बुद्ध ने भोग और विलास की जिन्दगी को सर्वथा तुच्छ-तिक्त करारते हुए त्यागपूर्ण जीवन और शुद्ध कल्याण की भावना से निष्काम सेवा का वह अनुपम आदर्श उपस्थित किया जिसकी आज के परिप्रेक्ष्य में भी उतनी ही आवश्यकता-अनिवार्यता दिखती है जितनी ही आज से ढाई हजार वर्ष पहले के जमाने में उभर आई थी।

भारतीय सांस्कृतिक इतिहास के पण्डितों को यह तथ्य भी सर्वथा सुविदित है कि वैदिक संस्कृति में जब कालक्रम से कुछ कालुष्य आ गये और वैदिक धर्म के नाम पर ऐसे-वैसे कर्म भी होने लगे पड़े थे कि उस समय के जन-जीवन में उस वैदिक धर्म के अनेक विधि-विधानों के प्रति जुगुप्सा के भाव उत्पन्न होने लग पड़े थे; और उसके फलस्वरूप एक भिन्न विधा जन-मानस में प्रवाहित हुई जिसका नेतृत्व करनेवाले 'श्रमण' के नाम से व्यवहृत होने लगे थे। और इस तरह वैदिक संस्कृति को ब्राह्मण-संस्कृति का नया नाम मिला और नयी विधावाली संस्कृति को श्रमण-संस्कृति। मगर, इतिहास इस बात का भी साक्षी है कि प्रथम जैन तीर्थंकर ऋषभदेव द्वारा प्रवर्त्तित प्रस्तुतीकृत नयी जीवन-दर्शन-धारा को परवर्ती तीर्थंकरों ने सुधारा-संवारा और भगवान् बुद्ध के अवतार काल तक २३ तीर्थंकर गुजर चुके थे और २४वें तीर्थंकर वर्धमान महावीर का जीवनकाल बीत रहा था। जिन्होंने, कहते हैं, 'अपरिग्रह' को इतना मान-मूल्य दिया कि एक नया संवर्ग ही जैनियों का दिगम्बर सम्प्रदाय के नाम से उभर आया। भगवान् बुद्ध ने, जैसा कि बौद्ध वाङ्मय में वर्णित है वैदिक और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रमण दोनों की संस्कृतियों का व्यावहारिक चिन्तन-मनन विश्लेषण कर दोनों के ही अतिवादी पचड़ों से बिल्कुल असंपृक्त-अलग समयोचित एवम् आवश्यकतानिष्ठ सुगम धारा मन्दाकिनीसी सुपावन और सु-अवगाहनीय व्यावहारिक जीवनदर्शन धारा बहाई, आर्य चतुष्टय पर आधारित-अनुप्राणित रही। और इसके लिए, उन्हें निशीथिनी निशा में गाढ़ी नींद में सोयी प्रेयसीअर्द्धागिनी और नवजात अबोध राहुल पुत्र तक से स्नेहवात्सल्य का तुनुकतन्तु सदा के लिए तोड़कर महाभिनिष्क्रमण करना पड़ा दर-दर की खाक छाननी पड़ी, महान् विद्वान् भृगु, प्रकाण्ड दार्शनिक अराल, महान् चितक रुद्दक रामपुत्र, जैसे अनेकानेक आश्रमवासी गुरुओं की चरण-सेवाए करनी पड़ीं, अजित केशकम्बलिन, मक्खलि गोशाल मश्करी पकुध कंचाअन, निगंठ नाथ पुत, आजीवक आदि तत्कालीन धर्माचार्यों के धर्मदर्शनों का महाँती के साथ मन्थन करना पड़ा; उरुवेल में ६ वर्षों तक कठिन तपश्चर्या करनी पड़ी, बोधिवक्ष के नीचे सुजाता का खीर खाकर, सम्यक् सबुद्धि पाकर भी परिपूर्ण काम अपने को नहीं माना। बल्कि बोधिप्राप्ति के अनन्तर तुरत ही विद्याकेन्द्र काशी गए जो उन दिनों ऋषियों—सत्यज्ञान के साक्षात्कार कर चुकने वाले महान् तत्वचितकों का गढ़ होने के कारण 'इसिपत्तन' कहा जाता था। और उसके एक पार्श्ववर्त्ती क्षेत्र में जो आज 'सारनाथ' नाम से प्रसिद्ध है, "धर्मचक्र प्रवत्तन" का पुण्य-अभियान आरम्भ किया और अस्सी वर्षों की आयु तक गांव-गांव, नगर-नगर अलख जगाते हुए जिज्ञासुओं को अपने अमृतोत्तम उपदेशों से दुख-विमुक्त बताते हुए कुशानगर में महानिर्वाण को प्राप्त हुए थे। भगवान् बुद्ध का पार्थिव शरीर उठ जाने के बाद भी 'धर्मचक्र प्रवर्त्तन नहीं बल्कि और तेज होता गया। भगवान् बुद्ध की वाणी को संगृहीत कर लिपिवद्ध सुरक्षित रखने का काम भी एक वार नहीं, बल्कि चार-चार वार होता रहा। और इस कार्य के लिए शिष्य परम्परा को विद्वन्मंडलियों का संगोर किया जाता रहा, जिसे संगीत कहा जाता है। प्रथम संगीति राजगीर की सप्तपर्णी गुफा में परिनिर्वाण के कुछ ही दिनों के बाद, महाकाश्यप की अध्यक्षता में बुलाई गई थी, दूसरी वैशाली में तीसरी, पटने में और चौथी कौशाम्बी में 'महासंधियों' की। पटने की संगीति की विशेषता यह रही कि देश की सीमा से बाहर भी धर्मचक्र प्रवर्त्तन किये जाने का सत्संकल्प यहीं लिया गया और आज लंका, वर्मा जावा, सुमात्रा, कम्बोडिया सियाम, मलाया, बोर्नियो, चीन, जापान, कोरिया, मंगोलिया, चीनी तुर्किस्तान, बलख, बुखारा, काशगर, तिब्बत भूटान, नेपाल, आदि देशों में जो बौद्ध संस्कृति के अमूल्य अनुपम अवशेष मिल रहे हैं, वे इसी संगीति के उत्तरकालीन परिणाम हैं। आज भी जनसंख्या की दृष्टि से बौद्धधर्मानुयायियों की आबादी ही दुनिया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में सर्वाधिक है और अगर कोई भी धर्म सही अर्थों में विश्वधर्म है तो यह बौ धर्म ही। और यह भी मुक्तकण्ठ कहा जायगा कि जितनी संख्या में विश्व बौद्ध साहित्य के ग्रन्थ आज भी उपलब्ध हैं, उतने ग्रन्थ किसी एक धार्मि साहित्य के कहीं नहीं मिलते। इस धर्म के चार प्रधान संप्रदाय-हीनयान महायान, सौमातिक और योगाचार हैं। वज्रयानी सिद्धों का, शून्यवादी दार्श निकों का, दिङ् नाग-धर्मकीर्ति आदि बौद्धनैयायिकों का, महेन्द्रसंघमित्रा आ धर्मप्रचारकों का, उदन्तपुरी, नालन्दा, विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालयों का औ फाहियानसेह्वेनसांग-इत्सिंग जैसे विदेशी शिष्यों के बौद्ध साहित्य और संस्कृ के क्षेत्र में अवदान ऐतिहासिक बन चुके हैं।

इन तमाम संदर्भों-समुदय-सूत्रों का साधिकार और प्रामाणिकतापूर्ण सन्दर्भ अगर किनी एक ग्रन्थ में देखना हो तो उसके लिए न केवल किसी भारतीय भाष में बल्कि तमाम विश्व की ही किसी भाषा में भोजपुरी महाकाव्य 'वउधायन' छोड़कर कोई दूसरा ग्रन्थ आज तक रचित नहीं हो सका है। ३१ सर्गों औ १५४८ पृष्ठों में सम्पन्न यह ऐतिहासिक महाकाव्य आरम्भ के २८ सर्गों में भगवा बुद्ध के जन्म से निर्वाण तक की कथा कहता है, और अन्तिम ३ सर्गों में धर्म विचार, धर्मोन्नति और धर्म अक्षयवट कंचन का सुन्दर प्रस्तुतीकरण हुआ है महाकाव्य की भाषा में सर्वत्र शाब्दिक सौष्ठव प्रासादिकता गुण, मुहावरेदा होने के कारण प्रसंसनीयतम प्रवाहपूर्णता, पग-पग पर दार्शनिकता का संपु और जगह जगह चित्रकाव्य; ध्वनिकाव्य आदि संयत-समोहक रचना-वैचि स्वामी जी के अन्तरात्माकृति विमलानन्द महाकवि प्रकृति परिस्फुरित परिस्फुटि होकर भोजपुरी भाषा को भाविक समृद्धि के शीर्ष पर बिठला चुकी है। जिन्हों इस 'वउधायन' का कुछ भी अंश पूज्यपाद ब्रह्मर्षिप्रतिम स्वामी जी के श्रीमुख सुनने का सुअवसर प्राप्त किया है, किंवा 'भोजपुरी' त्रैमासिक साहित्यिक 'अंजोर' के १९६०-६२ के अंकों में एवं उत्तर बिहार के दकशो पूर्व के कतिपय अं में आंशिक रूप से प्रकाशित 'वउधलीला' के पद्यों को पढ़ने का सौभाग्य संचि कर रखा है, वें मुक्त कंठ इस महामहनीय मनीषी के प्रति आभार प्रदर्शन कर ही जिसके पूरे एक दशक की निरन्तर साहित्य-साधना के सुमधुर श्रृङ्गार रूप में यह अभूतपूर्व महाकाव्य अवतीर्ण हो सका है। इसमें कवि-भाषा, भा नही उद्दाम-उदात्ततम सजीव रेखा-चित्र के रूप में उतारी हैं और चाहे राज का प्राकृतिक चित्रण हो, श्रावस्ती की ऐतिहासिक रूपावतारणा हो, तुनह बांग पुस्तकालय चर्चित हो, बोरोबुदूर (जावा) वास्तुकला वर्णना विषय हो अंकोरथो बायोन के मन्दिर दर्शनीय हो शून्यवाद की साकार समुद्, भावना हो किंवा प्रतो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समुत्पादवाद का वैज्ञानिक विश्लेषण, जैसी विकट-विराट विभावना हो, सर्वत्र समान भाव से शाश्वतिक सौन्दर्य और शाब्दिक सौष्ठव के साथ विमलानंद प्रवाहिता भारती खेलती-किलकारती-इठलाती-इतराती, उल्लसती-हुलसती स्वच्छंद संचारिणी-श्रोतृजन-हृदयहारिणी-विज्ञजन्नोमादिनी अबाध-निर्बाध-संचारिणी बन पड़ी है तभी तो यह भोजपुरी के पाणिनि आचार्य प्रवर डा० उदय नारायण तिवारी, भोजपुरी और हिन्दी के भवभूति डा० विवेकी राय, डा० कृष्ण देव उपाध्याय जैसे महामनीषियों द्वारा सोल्लास समादृत-सुप्रशंसित हो चुकी है और अनेकानेक भारतीय भाषाओं के मान्य-मीमांसक कवि-दार्शनिक-वाग्योगविद्वर आचार्य परमानन्दन शास्त्री ने महा-कवि-मुख निःसृता के रूप में इसेकर्णगोचर करते-करते रस-विभोर बनते हुए अनेक अवसरों पर इन पंक्तियों के लेखक द्वारा प्रत्यक्ष परिलक्षित किये जा चुके हैं। जिस प्रकार कवीन्द्र रवीन्द्र ने बंगला की यशोपताका विश्व में फहरा दी, कविकुलगुरु कालिदास ने संस्कृत काव्य पुरुष को कालजयी विश्वव्यापी महिमा-गरिमा से सुसज्ज किया, मैथिली को कवि-कोकिल विद्यापति नें परवान चढ़ा दिया, उससे भी अधिक स्वामी जी ने इस महाकाव्य में भोजपुरी का ललाट पट्ट सूर्यारूण सिन्दूरी-सुषमा से समुल्लसित ही नहीं किया-अमियमाधुरी के अथोर-आप्लावन से सहृदय-समाज को सदा के लिए अनुगृहीत-अधमर्ण बना छोड़ा है। अगर, यह कहने में कोई अत्युक्ति-अतिशयोक्ति न दीख सका हो विबुधजनम्रा त्रावगाह्य रामचरित सरिता के आदि काव्यात्मक घाट पर बिठाने वाले आदि कवि के अवतार ही अवधी भाषा के माध्यम से अवतारित-उद्भावित रामचरित मानस के सप्तसोपानसपुष्ट घाट पर आपामर मानव समाज को अमर-नहान का अवसर दिलाने में सर्वथा सफल-सक्षम संत तुलसी दास हुए हैं, तो यह भी मुक्त कंठ कहा जाएगा कि संस्कृत बाणी में बुद्ध-चरित का अमर-काव्य गायक महा-कवि अश्वघोष ही ने भोजपुरी की श्री-वृद्धि के साथ-साथ सारी मानवता को भगवान बुद्ध के उपदेश, आचार और लोक हितैषणा के साथ ही, अब तक विश्व के पोर-पोर में प्रवेश-संप्राप्त बौद्ध धर्म और साहित्य के सबंध में सही-सही सूचना भी सारल्येन उपलब्ध करा दी है। यह ग्रन्थ भोजपुरी ही क्यों ? दुनिया के तमाम 'बौद्ध वाङ्मय' में ही अपने आप में अद्वितीय बना है जिसके लिए अगली पीढ़ी-दर-पीढ़ी शंकर प्रतिमूर्त्ति स्वामी विमलानन्द जी सरस्वती के आगे नतमस्तक बनी रहेगी और भोजपुरी भाषा का अमर यशोवितान अनंतकाल तक विशाल विश्व में फहराता-लहराता मानवता की सही कल्याण-साधना करता रहेगा।

कुणाल कुमार,
सम्पादक, 'उत्तर बिहार' पटना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बउधायन–भोजपुरी कबऽढ़ियाँ महाकाव्य

भोजपुरी भाषा अपना प्रकृति से खुदे काव्य कऽ भाषा ह। एकर परिचय भोजपुरी का लोकगीतन के सुनि के मजे में मिलि जाला। गीति त गीतिये ह एकरा गद्य आ बोले के शैली में भी मिठास के आनन्द मिलबे करेला। व्यंग आ वक्रोक्ति त एकरा एक-एक बात में झलकेला, जवना पर लोग लट्टू हो जालन। लय आ ताल में गीति गा दिहला पर अबोध लरिको थिरके लागे ले सं। सन्त कवि लोग सही निसान आ लयदारी का कारन अपना मत के परचार में एह भाषा के योग लिहल।

ई गौरव के बात बा जे 'बौद्धायन' महाकाव्य एही भाषा में रचल गइल बा। आ ओहूले गौरव के बात ई बा जे एकर रचना कइले बानी भोजपुरी के मानल जानल विद्वान रचना कार श्री दण्ड स्वामी विमलानन्द जी सरस्वती। ई हाँ का पहिला दर्जा के कहानीकार भी हईं। ईहाँ के जेहलि का सनदि नांव के कहानी संग्रह के ना पढ़ले होई ? आ दांत का नीचे अंगुरी दबवले होई ?

'बौद्धायन' अइसन भोजपुरी के सबसे बढ़ियाँ आ बेसकीमत महाकाव्य के अद्भुत उपहार देइ के ईहां का भोजपुरी जगत के बड़हन उपकार कइले बानीं। ई महाकाव्य एकतीस सर्ग आ करीबन पनरह सौ पन्ना में बा। एकर रचना अलग-अलग तुकान्त छन्दन में भइल बा। एह छन्दन की मधुरता आ सरसता त पद्य पाठकन के पढ़ने से मिलि सकेला। जे लोग एकर सरस पाठ स्वामी जीं का कंठ से सुनले बा ओकर करेजा तर हो गइल बा। एकर दार्शनिकता त बेजोड़ बा। एइ तो एह महाकाव्य के कविता के आनन्द अलगेय बा, दर्शन के आकर्षण अलग बा आ बौद्ध धर्म के ज्ञान परिज्ञान के खिचाव अलगे बा। आम के आम आ गुठली के दाम बा। एकर गुन कहां ले बताई आ कहां ले गाई। ई पढ़ले से बुझाई।

भोजपुरी भाषा भाषी जनता एइ रचना-त्रिवेनी के भोजपुरी में प्रवाहित कइला खातिर स्वामी जी के बराबर आभारी रही। हमार ढेर कहल त छोट मुँह बढ़बात कहाई।

जगदीश ओझा' सुन्दर'

माल गोदाम रोड

बलिया, उ० प्र०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'बउधायन' भोजपुरी कऽ महाभारत

'बउधायन' महाकाव्य भगवान बुद्ध के जीवन पर आधारित भोजपुरी का एक बड़ा ही महत्वपूर्ण महाकाव्य है। इसके रचयिता भोजपुरी के अत्यन्त प्रख्यात लेखक, वाराणसी निवासी दंडिस्वामी विमलानन्द सरस्वती हैं। यह महाकाव्य ३१ सर्गो तथा हस्तलिखित १५४८ पृष्ठों में सम्पन्न हुआ है। यह रचना कवि के दस वर्षो के अनवरत परिश्रम का परिणाम है, जिसकी तुलना ग्रीक के एलियड और वाल्मीकीय रामायण से की जा सकती है। यह ग्रंथ भोजपुरी का 'महाभारत' माना जाएगा, अतः इसका महत्व बहुत बड़ा है। देश के बड़े-बड़े धुरंधर विद्वानों ने इसकी प्रशंसा मुक्त कंठ से की है। काव्य के माध्यम से इसमें धर्म, दर्शन, राजनीति, इतिहास आदि विषयों का समावेश है। यह ग्रन्थ रस, अलंकार एवं छंद आदि की दृष्टि से भी, हर तरह से प्रशंसनीय है और यह न केवल भोजपुरी साहित्य के ग्रन्थों में अपितु देश-विदेश के ग्रन्थों में भी स्थान पाने योग्य है। इसके प्रकाशन से भोजपुरी साहित्य के गौरव की वृद्धि निश्चित रूप से होगी।

हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय'
निदेशक
भोजपुरी अकादमी
पटना

बौद्धायन (भोजपुरी-साहित्य के गौरव ग्रन्थ)

'अंजोर' पत्रिका के जब से सम्पादन-प्रकाशन शुरू कइलीं, अनेक भोजपुरी साहित्य के साहित्यकारन के प्रकाश में ले अइलीं। ढेर लोगन के केहू जानत भी ना रहे, आ प्रचार, प्रसार भा विज्ञापन के कौनो माध्यम भी ना रहे। स्व० श्री रघुवंश बाबू के भोजपुरी पत्रिका रहि-रहि के निकले आ सबका पास उ पहुँचतो ना रहे। स्व० बा० शिवपूजन सहाय जी का देख रेख में अंजोर के सम्पादन होखे लागल। उहाँ का अनेक पुरान साहित्यकारन के नांव पता बतवलीं। ओह लोगन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से लिखे के निहोरा भइल आलेख कविता कहानी आवे लागल। अनगिनत नया लेखक कवि अंजोर का अंजोर में चमकले। पिछला २० बरिस से अंजोर के ई सिलसिला जारी बा। अइसने पुरान साहित्यकारन में श्री विमलानन्द सरस्वती अब दण्डि स्वामी श्री विमलानन्द सरस्वती के नाँव सुनाइल।

बक्सर चरित्र वन में इहाँ के आश्रम बा जहाँ कि संस्कृत विद्यालय के अपने संचालन करत रहीं। हम जाके भेंट कइलीं। बातचीत का सिलसिला में उनकर संस्कृत,हिन्दी बौद्ध-साहित्य आ भोजपुरी साहित्य के गम्भीर अध्ययन के पता चलल। ओह घरी भोजपुरी शब्दन के अपने के संकलन करत रहीं आ १३ हजार शब्द तैयार रहे। आपन लिखल "जेहल क सनदि" नाँव के किताब दिहली, जे भोजपुरी साहित्य के पहिला कहानी संग्रह कहाला। राजगुरू मठ शिवाला घाट वाराणसी के अपने महन्थ हई जहाँ हमरा कई बेर ठहरे के मोका मिलल। अपना कोठरी में चौकी पर साहित्य, संस्कृत, राजनीति, दर्शन इत्यादि के सैकड़न ग्रन्थ रखले बानी, जेकरा से अपने के गम्भीर अध्ययन के पता चलेला।

बौद्धायन के कुछ अंश हमरा के सुनवली। ऐसन ग्रन्थ भोजपुरी साहित्य में अबहीं तक देखे के ना मिलल। एह तरे कुछ खण्ड काव्य आ महाकाव्य भी भोजपुरी में लिखाइल बा। ग्रन्थ में बौद्ध-कालीन समाज के सजीव चित्रण भगवान बुद्ध के जीवन गाथा के जीवन्त वर्णन, इतिहास का पृष्टभूमि पर आधारित एगो अद्‌भुद् ग्रन्थ बा भोजपुरी भाषा के ठेठ शब्दन के सजावट, छन्द के प्रवाह आ कथानक के रोचकता से भरपूर इ ग्रन्थ पढ़त खा छोड़े के मन ना करे।

कहीं कहीं शब्दन का प्रयोग में हमार उनका से मतभेद बा तत्सम शब्द के उचित व्यवहार पर हम अधिका जोर दीला। लेकिन भासा शैली लेख के (style is the man) आपन रूचिह। ओकरा बारे मे अधिका का कहाय।

अन्त में हम इहे कह बि कि इ महाकाव्य भोजपुरी साहित्य के गौरव ग्रन्थ कहाई। एकरा में जल्दी दू मत ना होखी। भगवान करसु सरस्वती जी दीर्घायु होखीं मा अपना प्रौढ लेखनी से भोजपुरी साहित्य के अउर भंडार भरीं। इ महाकाव्य लिखि के उहाँ का समस्त भोजपुरी संसार के बधाई के पात्र बानी।

स्व० पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय
भू० पू० अध्यक्ष, भोजपुरी परिवार, पटना
संपादक—'अंजोर'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कालजयी महाकाव्य—'बउधायन'

(दैनिक आज, कानपुर–१-१-१९७७ से)

स्वामी जी की सबसे सशक्त और कालजयी रचना 'बौद्धायन' है। लोक-भाषा में रचा गया यह पहला महाकाव्य है। ३१ सर्गों के इस विशाल महाकाव्य को देखकर महाकवि की रचना शक्ति का लोहा मानना पड़ता है। ४० हजार पंक्तियों का यह महाकाव्य बौद्ध धर्म का विश्वकोश है। अश्वघोष के 'बुद्धचरितम्' के बाद भारत या दुनियाँ की किसी भाषा में भगवान बुद्ध के जीवन चरित्र और और बौद्ध-दर्शन-साहित्य पर कोई भी महाकाव्य नहीं लिखा गया है। तिब्बती और चीनी भाषा में 'बुद्धचरितम्' का अनुवाद किया गया है। एडविन आर्नाल्ड ने चीनी अनुवाद के आधार पर उसका अंग्रेजी में छायानुवाद किया है जिसे 'light of Asia' नाम दिया गया है। आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के संस्कृत-अध्यापक प्रोफेसर डा० जान्सटन ने भी तिब्बती चीनी अनुवाद के आधार पर 'बुद्धचरितम्' का अंग्रेजी में अनुवाद किया है। 'बौद्धायन' इस दिशा में मौलिक कृति है। इसमें 'बुद्धचरित' के अतिरिक्त तत्कालीन वृहत्तर भारत का ऐतिहासिक चित्रण भी है। 'बौद्धायन' के २८ सर्गों में भगवान बुद्ध के जन्म से निर्वाण तक के घटना क्रम का वर्णन है। शेष तीन सर्गों में वृहत्तर भारत का इतिहास, मध्य एशिया, चीन, लंका, जावा, सुमात्रा, जापान आदि में बौद्ध धर्म के प्रचारकों की यात्राओं एवं कार्यकलापों का रोमांचक चित्रण है। महाकाव्य का प्रारम्भ भगवान बुद्ध के आगमन के पूर्व देश की धार्मिक-सामाजिक स्थिति के चित्रण से हुआ है :—

'जहाँ धरम-रथ धँसल पाँक में,
असमय टूटल धूरा,
राति अन्हरिया बड़ी भयावनि,
मँचल अन्हेर धरतिया काँपलि,
भइल धरम के हानी।
'सोना चानी का टुकड़ा पर,
भइल जिनिगिया कऽ जब सउदा,
मन अकास माया कऽ बादर,
उमड़ि-घुमड़ि नाँचति चहुँ ओर,
टिशुना लता पनपि के तोपलसि;
सगरे डहरि अन्हार।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोक-भाषा भोजपुरी में दर्शन, साहित्य और इतिहास जैसे गूढ़ विषयों पर भी स्वामी जी की कलम इतनी बेबाकी से सरसराती हुई चली है कि 'बौद्धायन' को पढ़ने वाले का मन नहीं अघायेगा। भोजपुरी में मुक्त छन्दों की रचना केवल स्वामी जी के बस की बात थी। प्राकृतिक चित्रण करते समय, लुम्बिनी, हिमालय और उषाकाल के चित्रण में उन्होंने जो साफगोई बरती है बौद्ध सिद्धान्तों के समझाने में उतनी ही सरसता हैं।

गम्भीर विषयों को भी इतनी सरल और सरस भाषा में व्यक्त किया गया है कि अन्यत्र ऐसी सरलता और सरसता का समन्वय कम देखने को मिलता है। वृद्धावस्था का चित्रण देखिये—

'सिसिर रीतु जिनिगी कऽ आई,
गँछियाँ कऽ पतई पियराई,
दिनवाँ कले-कले नियराई,
आखिर गिरी पतइया भुइयाँ,
जहाँ तहाँ उधियाई।'

इन तमाम विशेषताओं के वावजूद 'बौद्धायन' आज तक प्रकाशित नहीं हो पाया है, कारण कि वह डा० विवेकीराय के अनुसार 'कमजोर रचयिता की सशक्त रचना' है।

स्वामी जी 'बौद्धायन' के प्रकाशन के लिये वह सब कुछ नहीं कर पाते जो आज किसी पुस्तक को प्रकाशित करने के लिये करना होता है। रचना कर उन्होंने स्वान्तः सुख तो प्राप्त कर लिया किन्तु आगे का काम तो दूसरों का है। उन्होंने डा० विवेकीराय की उत्सुकता यह कहकर शान्त की थी—'बस मेरी सामर्थ्य का अन्त लिखने तक था, प्रकाशकों के यहाँ पहुँच नहीं है—रचयिता यहीं आकर कमजोर पड़ गया है।' आज वे यही कहते हैं किन्तु आज भोजपुरी के प्रेमियों को भय है कि अपनी डफली अपना राग के इस युग में सब तरफ से उपेक्षित भोजपुरी का अग्रदूत यह कालजयी 'बौद्धायेन' कहीं वस्ते में ही पड़ा न रह जाय।

—रामधनी द्विवेदी
उपसम्पादक, अमृत प्रभात, इलाहाबाद!
१-१-७७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'बउधायन' के प्रणयन की कहानी

× × ×

प्रख्यात भाषाशास्त्री की बानी

संपादक—'उत्तर-विहार' के नाम पत्र

६, अलोपीबाग
इलाहाबाद

प्रियवर कुणाल कुमार जी,

सस्नेह आशीर्वाद।

पहले 'उत्तर बिहार' का अंक मिला और इसके वाद आप का पत्र। मैं 'उत्तर विहार' का प्रत्येक अंक अथ से इति तक पढ़ता हूँ। विहार की तथ्यपूर्ण सामग्री तो इसमें मिल ही जाती है, इसके अतिरिक्त भी मेरे लिये उसमें मिल ही जाती है, इसके अतिरिक्त मी मेरे लिये उसमें ऐसे तत्व मिल जाते हैं जो अन्यत्र उपलब्ध नहीं होते। फिर 'चलते-चलते' शीर्षक के अन्तर्गत, वाणभट्ट की शैली में आप द्वारा लिखित सशक्त गद्य को तो कभी-कभी दो बार पढ़ता हूँ और उसकी कतरन (कटिंग) लेकर उसे संजोकर रख लेता हूँ। आप अपने लेखों और प्रति क्रियाओं में जिस शिष्ट एवं सशक्त शैली का प्रयोग करते हैं हैं वह अनुकरणीय है उससे हिन्दी की शक्ति का सहज बोध होता है। बीच बीच में संस्कृत के उद्धरण तो मेरे जैसे पाठक को रससिक्त कर देते हैं। कृपया इनके लिये मेरा हार्दिक आशीर्वाद स्वीकार करें।

'वौद्धायन' अथवा 'वउध-लीला' के प्रणेता पूज्य दंडी स्वामी विमलानन्द सरस्वती जी से तो मैं गत चालिस-पैंतालिस वर्षों से, उस समय से, अतिनिकट संपर्क में हूँ जब वे संन्यासी नहीं हुए थे। उस समय वे श्री अवध विहारी 'सुमन' के नाम से प्रख्यात थे तथा प्रसिद्ध किसान नेता स्वामी सहजानंद जी के अनुयायी थे। महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन के साथ वे मेरे घर आये थे। राहुलजी उन दिनों, शरद् ऋतु में प्रायः तीन महीने मेरे ही घर पर रहते थे, उन दिनों उनकी पुस्तकें यहाँ के लाजर्नल प्रेस में छपती थीं। वाद में सुमन जी ने वाराणसी के राजगुरु मठ में सन्यास की दीक्षा ले ली और दण्डी स्वामी विमलानन्द जी हो गये। स्वामी जी आयु में मुझसे कुछ छोटे हैं। मेरी अवस्था सम्प्रति ७७ वर्ष की है। राहुल जी बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति थे, लोक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भाषाओं की ओर भी उनकी दृष्टि थी। मेरी, राहुल जी की तथा सुमन जी की मातृ भाषा भोजपुरी थी। उस समय अपनी भोजपुरी की डी०लिट् की थीसिस का कार्य मैं समाप्त कर चुका था। मूल थीसिस अंग्रेजी में लिखी गई थी और इसके निर्देशक कलकत्ता वि० वि० के भाषा विज्ञान के आचार्य, प्रसिद्ध विद्वान् प्रातः स्मरणीय डा० सुनीति कुमार चटर्जी थे। यह पुस्तक अंग्रेजी में the origin and Development of Bhojpuri नाम से एशियाटिक सोसायटी कलकत्ता से विलियम जोन्स सीरिज में प्रकाशित है। इसका सम्बन्ध भोजपुरी व्याकरण एवं संरचना से है।

हम तीनों (मेरी, राहुल जी तथा सुमन जी) की विचार-विनियम की भाषा भोजपुरी थी। उस समय हम लोगों के सामने यह विचार आया कि क्या भोजपुरी गद्य में साहित्य-रचना हो सकती है? प्रयोग के लिए राहुल जी ने भोजपुरी में चार-पाँच नाटक लिखे। उधर स्वामी जी (तब अवधविहारी सुमन) के नाम से भोजपुरी में एक पुस्तक 'जेहलकऽसनदि' निकली। 'जेहल कऽसनदि' भोजपुरी में लिखित कहानियों का संग्रह है। इसकी भाषा खांटी मुहावरेदार सशक्त भोजपुरी है। इसके पढ़ने से हम लोगों को विश्वास हुआ कि भोजपुरी में विचार व्यक्त करने की पूरी क्षमता है।

राहुल जी के दिवंगत हो जाने तथा सुमन जी के स्वामी बन जाने के बाद भी मेरा उनसे (स्वामीजी से) सम्पर्क सम्बन्ध पूर्ववत् हैं। आज से कई वर्ष पूर्व मैंने स्वामी जी से निवेदन किया यदि आप भोजपुरी में कोई महाकाव्य लिखदें तो इसका बड़ा उपकार होगा। क्योंकि आप के समान भोजपुरी पर किसी अन्य व्यक्ति का अधिकार नहीं है। स्वामी जी ने लगभग दस-बारह वर्ष लगाकर बौद्धायन की रचना की। संक्षेप में यही इसके प्रणयन की कहानी है। मुझे पूर्ण आशा थी कि भोजपुरी अकादमी इसे प्रकाशित कर यश की भागी बनेगी। पुस्तक किंचित् बड़ी है और इसके प्रकाशन में तीस चालीस हजार रुपये व्यय होंगे किन्तु इससे अकादमी को जो गौरव मिलेगा वह अतुलनीय होगा। अस्तु, कभी न कभी पुस्तक तो छपेगी ही। यह दूसरी बात है कि आयु अधिक होने से मैं इसे प्रकाशित रूप में देख न सकूँगा।

आपने 'उत्तर-विहार' इसके प्रकाशन के सम्बन्ध में जो प्रतिक्रिया व्यक्त की है वह नितान्त शिष्ट एवं समयोचित है किन्तु मैं तो साक्षी भाव के रूप में यह लीला देख रहा हूँ। मेरा अभिजन बलिया सम्भाग में, शहर के निकट एक गाँव में है। राजनैतिक-सीमा की दृष्टि से मैं उत्तर प्रदेश में हूँ किन्तु मातृ भाषा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की दृष्टि से मेरा सम्बन्ध बिहार से है। गत छप्पन सत्तावन वर्षों से मैं प्रयाग में हूँ और अब यह मेरा गृह-नगर बन गया है। यहाँ मैंने अपना मकान बनवा लिया है। मुझे बिहार की सभी भाषाओं मैथिली, मगही बाज्जिका एवं अंगिका से से उसी प्रकार से प्रेम है जैसा अपनी मातृभाषा भोजपुरी से। मैंने बहुत पहले इस तत्व का अनुभव किया था कि ये भाषाएं राष्ट्रभाषा हिन्दी की प्रतिद्वन्दी नहीं अपितु पूरक एवं सहायक हैं। मैंने कभी-कभी पटने भी जाता हूँ। भविष्य में यदि वहाँ आने का अवसर मिला तो अवश्य मिलूँगा। आप यदा-कदा मुझे पत्र लिखा करें, मुझे सुख मिलेगा।

—सस्नेह मंगल कामना सहित ॥ —उदय नारायण तिवारी

'बौद्धायन–भोजपुरी का लिलार कऽ लाल बिंदी

"ललक उठल ए सुंदर कृति का, बारे में हम लिखि मारी।
का बा लोग कहत एकरा के, ईहो तऽ हम परचारीं ॥"

बा 'बउधायन' श्रेष्ठ ग्रंथ आ बा उपयोगी हर प्रकार।
जवने कुछ बा वर्णित एमें, बा अनुश्रुत, भय, उदार ॥

सुंदर, सरल, सरस वाणी में वुधकालिक जन जीवन के।
चर्चा बाटे कइल सुविस्तृत, संस्कृति, इतिवृत्त दर्शन के ॥

बा अन्य भारतीय भपन में, अइसन कृति कहवाँ उपलब्ध ?
जेकर गान केहू कइले हो, पंडित, ज्ञानी, विश्रुत, विदग्ध।
भोजपुरी भाषा के ई निधि, धनपति के नव निधियन से।

कच्छप, मकर, मुकुंद, कुंद आ वर्च्च, नीलमणि आदिन से ॥
उन्नत बा पवले थल आपन, ए में बा संदेह कहाँ ?

वड़हन महाकाव्य के दर्जा, देता एके विश्व जहाँ।
अतुल ग्रंथ ई भोजपुरी का, बा ललाट के बिंदी लाल।

स्वामी विमलानन्द के देखीं, एमें सगरी कइल कमाल ॥

—शास्त्री सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी
अध्यक्ष
बिहार राज्य-भोजपुरी-सम्मेलन
साधनापुरी, पटना—१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'बउधायन'—भोजपुरी रत्न के विचार

बहुत बरिसन का परिश्रम का बाद दण्डि स्वामी विमलानन्द जी सरस्वती 'बौधायन' महाकाव्य लिखले बानीं। 'बौधायन' लिखल गइल बा अपना मातृभाषा भोजपुरी के भण्डार भरे खातिर आ ओहमें स्वामी जी पूरा सफल बानीं।

डा० राम विचार पाण्डेय,

भोजपुरी रत्न

बलिया ११–११–८०

"बौद्धयान" पर सम्मति

भोजपुरी को मूर्द्धाभिषिक्त करने का स्तुत्य प्रयास

भोजपुरी में काव्य की धारा आठवीं-नवीं शती से ही अप्रतिहत प्रवहमान है। फिर भी महान् व्यक्ति को चरितनायक मानकर कथात्मक काव्य न रचा जाने के कारण भोजपुरी को वह गौरव नहीं प्राप्त हो सका, जो महिमा गो० तुलसीदास कृत 'श्री रामचरित मानस' के कारण अवधी को एवं महात्मा सूरदास की कृति 'सूर सागर' के कारण ब्रजी को प्राप्त हुई।

गर्व का विषय है कि श्री दण्डी स्वामी विमलानन्द सरस्वती ने भगवान बुद्ध को चरितनायक बनाकर ३१ सर्गों के अपने महाकाय महाकाव्य 'बौद्धायन' द्वारा इस अभाव की पूर्तिकर भोजपुरी को मूर्द्धाभिषिक्त करने का स्तुत्य प्रयास किया है। इसमें संदेह नहीं कि 'बौद्धायन' कथात्मक चरित काव्यों की शृङ्खला में एक महत्वपूर्ण अवदान माना जायेगा। स्वामी जी ने इस महाकाव्य की संरचना में शास्त्रीय शर्तों का अनुपालन तो किया ही है. साथ ही अपनी नव्यतम अनुभूतियों से सवाँरकर इसे जीवन्त और शाश्वत कृति बना दी है। गहरी रचनात्मक दृष्टि, ठोस विचार, गत्यात्मक संवेदनशीलता, सूक्ष्म अभिव्यक्ति के तत्व तो इसमें हैं ही, साथ ही अतीत का गौरव, इतिहास के स्वर, मनोहारी प्रकृति-चित्रण, नवजागरण सन्देश, सूक्ष्म भावनात्मक स्वर, अनन्त गत्याभास, आध्यात्मिकता; अछूती कल्पनाओं का अद्भुत संगठन और भाषा का पाञ्जल एवं तरल प्रवाह, के उपायन 'बौद्धायन' को एक अनमोल ग्रंथ प्रमाणित कर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देते हैं। रचनाकार ने कथा के केन्द्र में भगवान् बुद्ध को रखकर बौद्ध-दर्शन एवं तत्कालीन संस्कृति का मनोहारी परिचय दिया है।

भगवान बुद्ध को चरितनायक मानकर संस्कृत, अँगरेजी और हिन्दी में अब तक जितने ग्रंथ रचे गये हैं, उनमें 'बौद्धायन' विशिष्ट है। इस रचना की सबसे बड़ी उपलब्धि है शिल्प और शैली की नूतन संरचना। निखालिस और खाँटी भोजपुरी शब्दों के प्रयोग में कवि सिद्धहस्त है। खाँटी भोजपुरी के इन प्रयोगों में रस निचुड़ता नहीं, छलकता दृष्टिगोचर होता है। भाषा का प्रवाह और शिल्प-संयोजन आद्यन्त पाठक को अभिभूत और रसविभोर करने वाला है। रसधार कहीं खंडित नहीं होती। स्वामी जी के इस महाकाव्य से भोजपुरी तो समृद्ध होगी ही, भोजपुरी भाषी जनता भी गौरवान्वित होगी, यह मेरा विश्वास है।

—डा० आद्याप्रसाद द्विवेदी
एम० ए०, पी०-एच० डी०
(अध्यक्ष) स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
सतीशचन्द्र कॉलेज, बलिया (उ० प्र०)

'बौद्धायन'—भोजपुरी की अमूल्यनिधि

'बौद्धायन' स्वामीजी की अमरकृति है और भोजपुरी की अमूल्यनिधि है। इसमें सन्देह नहीं कि इस महाकाव्य का प्रकाशन युगान्तरकारी सिद्ध होगा और इससे भोजपुरी ही नहीं, भारतीय भाषाएँ भी भूषित-विभूषित होंगी।

—रामनगीना राय
संपादक
'गाधीयाना', लखनऊ
भू० पू० सदस्य
प्रवर समिति
अ० भा० भोजपुरी साहित्य-सम्मेलन
पटना—१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'बउधायन'—भोजपुरी कऽ विलच्छन महाकाव्य

भोजपुरी-साहित्य-जगत् में महाकाव्य लिखाइल बा आ लिखाइयो रहल बा। आपन गीति तऽ सभे गावे ला आ ऊ सभ केहू का नीक लागे ले, बाकी ओकर सवतुक कसौटी रहेले दूसरे का पास। हँ, संन्यासीजी का महाकाव्य 'बउधायन' कऽ रूप अनूप होखे कऽ कई गो कारन बाड़न सऽ। संन्यासी जी से हमार साहित्यिक नाता बहुत पुरान बा। इहाँ के पद्य मा गद्य के अनुराग, इहाँ का विदारथिये जीवन से चलल आवत बा। सवतुक, सामयिक, मार्मिक आ मोहक साहित्य के इहाँ का सफल रचनिहार हईं

जवना समय में असहाय पोलैंड पर पड़ोसी कऽ हुँकार भरल हमला भइल, संसार में हलचल मचि गइल। ओह घरी संन्यासी जी कऽ एगो कविता छपलि रहे, जवना कऽ दूइ गो पाँति अइसने रहली सऽ :—

'चीख उठा पोलैंड मुर्ग, गोर्यरिंग बोला एक मिनट और।
यह धारदार मेरी छूरी, अब तेरी आधी गर्दन रेत चुकी ।।'

× × ×

संन्यासी जी साहित्य जगत में 'सुमन' जी का नाँव से उजागर रहीं आ साहित्य सेवा का साथ इहाँ कऽ बड़ा नगद जोगदान रहि चुकल बा। किसान-समाज का कयलान खातिर इहाँ का संपादन में बगसर से 'कृषक' नाव का साप्ताहिक पत्र कऽ रुचिगर प्रकाशन होत रहे। महापंडित राहुल सांस्कृत्यायनजी का इशारा पर इहाँ का 'कृषक' कऽ प्रकाशन कुछ दिन करीब दूइ बरिस तक निछक्का भोजपुरी में कइले रहलीं। ओह प्रकाशन कऽ ढ़ेर अंक देखका आ झींगुर चाटि गइलन सऽ, बाकी अवहीं तक हमरा पासे कुछ अंक बाड़न सऽ।

इहाँ का भोजपुरी भासा कऽ पहिला कहानीकार हईं। १९४८ ई० में इहाँ का भोजपुरी कहनिन कऽ संग्रह 'जेहल कऽ सनदि' प्रकाशित भइल रहे। ओह कहनी-संग्रह में दस गो कहनी रहली सऽ। उन्हन कऽ मथेला रहे—'मलिकार', 'आतमघात', 'मँवनी बाबा', 'कतवारू दादा', 'चउर कऽ पूजा', 'सनकी', 'दफा ३०२', 'कवि कयलास'; 'किसान-भगवान' आ 'जेहल कऽ सनदि'। ओह कहनिन कऽ भासा, भाव, शैली आ साहित्य साँचा के ढारल बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिहार राज का भोजपुरी-अकादमी का ओर से संन्यासीजी कऽ सम्मान; हमरा भोजपुरी-अकादमी का सामान्य-समिति का सदस्य का नाते बड़ा आनन्द, सुख आ शांति देवे वाला जनाइल रहे। साहित्य जगत का 'सुमन' जी का संन्यास ले लिहला से हमरा ई जनाइल रहे कि अब इहाँ से भोजपुरी भासा आ साहित्य का विकास कऽ आशा नइँखे। संन्यासी भइलो पर भेंट तऽ इहाँ से बराबर होत रहे बाकी साहित्य-चर्चा कऽ कबो नाँव तक ना। एक बेर पटना पहुँचली तऽ पाण्डेय नर्वदेश्वर सहायजी ई शुभ समाचार सुनवलीं जे—'दण्डी स्वामी विमलानन्द सरस्वती कऽ कलम बउध-साहित्य पर सराहनीय ढंग से चलि रहलि बा। 'अँजोर' में ओह समय इहाँ का 'बउध-लीला' का नाव से आपन महाकाव्य प्रकाशित करत रहलीं। उ सिलसिला करीब दस बरिसन तक (१९६० से १९७०तक) चलत रहल। उहाँ का ओह 'अँजोर' कऽ अंक हमरा पास बाड़न सऽ, जवना में 'बउध-लीला' छपल बा।

संन्यासीजी कऽ 'बउधायन' पढ़ि लिहला का बाद बौद्ध-साहित्य, संस्कृति आ बौद्ध-धर्म-दर्शन कऽ पुरहर बोध हो जाता। इहाँ कऽ महाकाव्य करीब डेढ़ हजार पन्नन आ एकतिस सरगन में पूरा भइल बा। गहिराई से अध्ययन का साथ जवना निपुनता से इहाँ का बउध-धरम आ ओकरा बढंती कऽ—सोनहुला जुग कऽ तसवीरि खिचले बानीं, ओइसन दूसर जगहि दुरलभ बा।

बालमिकि रामायन का बालकाण्ड में रामावतार कऽ नगद बरनन आइल बा आ ओइसहीं गीता में भगवान कृश्न कऽ कथन बा जे जब-जब धरम कऽ हानि होले तब-तब हम अवतार लेइके साधु-समाज अउरी धरम कऽ रच्छा करीला। अइसने अवतारिक बरनन संन्यासिओ जी 'बउधायन' में देले बानीं। जइसे—

"भगतन कऽ दुरदशा देखिई;
डहकल रोवल जार-बे-जार।
दयासिंधु कऽ दिलवा पसिजल,
बहल नेह कऽ धार।"

संन्यासीजी का बउधावतार बरनन में कपिलवस्तु में सूरज कऽ चक्का उगल बा। अवतार भइला पर पिता शुद्धोदन धन-दउलति आ सुख भोग कऽ मोहक जाल बिछवले बाड़न, बाकी ओह जंजाली जाल पर संन्यासी जी कऽ आखिरी दलेल बाकि—

'जल ठहरी पुरइनि का पातें'?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सवाल गूढ़ बा, नकली जाल रूपी जल एसे ना ठहरल जे महापुरुस भगवान बउधदेव जी कऽ अवतार भइल रहे जुगबोध कहावे आ परम-शांति कऽ डहरि देखावे खातिर। संन्यासी का महाकाब्य में बउधदेव जी का चरित आ उपदेश कऽ रोचक बरनन आइल बा। ई महाकाव्य, बौद्ध-दर्शन, इतिहास-आ रुचिकर काव्य का संगम का रूप में पवित्तर तिरबेनी सरूप बा। एह महाकाव्य से भोजपुरिये भासा बोले-समुझे वाला लोग ना, बलुक राष्ट्रभाषा हिन्दी का अलावे अउरी लोग आनन्द ली, अइसन हमार बिसवास बा।

कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र'
मंत्री,
भोजपुरी साहित्य-मंडल
बक्सर।

ॐ

'बउधायन'-युगान्तरकारी महाकाव्य

साहित्य की दृष्टि से नितान्त उपेक्षित निपट गवाँरु भाषा कही जाने वाली भोजपुरी में एक ऐसे सशक्त महाकाव्य की रचना हो सकती है, जिसका कथ्य विश्वमहामानव भगवान बुद्ध हों, और जिसके काव्य के विशाल आयाम में सहस्त्राब्दियों का वह आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक वैभव मुखरित हो उठे, जिसे सम्पूर्ण एशिया के साथ बृहत्तर भारत ने उपार्जित किया था। इस आश्चर्य कर समाचार पर विश्वास करने के लिए मैं विद्वानों से अनुरोध करता हूँ कि वे दण्डी स्वामी श्री विमलानन्द सरस्वती का महाकाव्य "बौद्धायन" खोज कर पढ़ें।

यह महाकाव्य बरबस ही अपनी ओर सहृदय-मन को आकृष्ट करता है। भाषा एवं साहित्य के बनावटीपन से बहुत दूर, जीवन की सहजता को छूता हुआ बीच-बीच में हृदयस्पर्शी भोजपुरी मुहावरों द्वारा मुखरित, बुद्ध के अध्यातम और संस्कृति की उदात्त एवं गम्भीर अनुभूतियों को सप्राण बनाकर जन तथा विज्ञजन दोनों को उसके पवित्र स्पर्श से भावविभोर कर देना "बौद्धायन" महाकाव्य की उल्लेखनीय क्षमता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विदित है कि भगवान बुद्ध ने लोकजीवन को अपने सन्दर्भ अनुप्राणित रखने के लिए जनपदीय-भाषाओं 'सकायनिरुत्तिया' का माध्यम स्वीकार किया था। यद्यपि बाद में संस्कृत भाषा में भी विशाल बौद्ध-वाङ्मय लिखा गया, किन्तु पूरे प्रयास के बाद भी उसमें पालि की हृदयग्राहिता नहीं आ सकी। "बौद्धायन" महाकाव्य को सुनने के बाद लोकभाषा के पक्ष में वह तथ्य और भी पुष्ट हो रहा हैं। मुझे डर है कि भोजपुरी के प्रति घोर उपेक्षा के कारण कहीं उसका यह महाकाव्य भी अप्रचारित न रह जाय। इससे बचने के लिए सर्वप्रथम इस क्षेत्र के विद्वानों एवं पुस्तकालयों का ध्यान आकृष्ट किया जाना चाहिए। मेरा विश्वास है कि इस महाकाव्य को यदि प्रचार का समुचित माध्यम मिलता गया तो अपनी सशक्त अभिव्यक्ति के आधार पर ही यह महाकाव्य अन्य भारतीय भाषाओं को प्रभावित करेगा। अवश्य ही अन्य विभिन्न भारतीय भाषाओं में इसका अनुवाद भी होगा और इसके अनुकरण पर रचनायें भी की जायेंगी।

मैं इस युगान्तरकारी एवं ऐतिहासिक महाकाव्य की रचना के लिए उसके महाकवि स्वामी विमलानन्द सरस्वती को श्रद्धापूर्वक धन्यवाद प्रदान करता हूं।

प्रो० जगन्नाथ उपाध्याय
अध्यक्ष-पालि एवं थेरवाद विभाग
अध्यक्ष--श्रमण विद्या संकाय।
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय,
वाराणसी।

महाकाव्य-'बउधायन' से लोककल्याण की सिद्धि

स्वामी श्री विमलानन्द सरस्वती के साथ दो दिन लगभग ३-३ घण्टे सत्संग हुआ। उन्होने भोजपुरी भाषा में स्वरचित "बौद्धायन-महाकाव्य" से विभिन्न अंश पढ़कर सुनाये। मैं यद्यपि भोजपुर भाषा-भाषी नहीं हूं, और उसके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुहावरों का तलस्पर्शी अर्थ कुछ कम ही हृदयंगत होता है, फिर भी अनेक स्थलों पर मुझे रोमहर्ष हुआ, यह स्वामी जी की भाषा की प्रवाहशीलता और बोधगम्यता का परिचायक हैं।

मैंने आलोचनात्मक दृष्टि से सतर्कतापूर्वक काव्यांश सुने, किन्तु बौद्ध दर्शन, धर्म और इतिहास परम्परा की दृष्टि से कुछ भी उल्लेखनीय वैपरीत्य दृष्टिगोचर नहीं हुआ। स्वामी जी ने सम्बद्ध विषयों का प्रगाढ़ अध्ययन कर अपने हृदय की सहज भाषा में लोकहित की दृष्टि से जो अमृतमय काव्य प्रस्तुत किया है, अवश्य वह लोकहृदय में स्थान ग्रहण करेगा, इसमें सन्देह नहीं।

करुणामूर्ति भगवान् बुद्ध ने अपने सारे उपदेश लोकभाषा में ही दिये थे। उनका आग्रह था कि अपनी-अपनी भाषा में ही उन्हें धारण करें। भाषा-पावित्रम् के दुराग्रह से मुक्त उनके विचारों ने एक ओर लोकभाषाओं को समृद्ध किया और दूसरी ओर बहुजन का अधिक से अधिक उपकार किया। भगवान बुद्ध के विचार आज सबसे ज्यादा प्रासंगिक थे। उन्हें सामान्य जन तक पहुँचा कर जनमानस के परिष्कार में सहयोग प्रदान करना युग की महती आवश्यकता है। स्वामी जी ने काव्य के माध्यम से लोकभाषा में लोकपुरुष बुद्ध की महिमा का वर्णन कर इस दिशा में अत्यन्त सराहनीय कार्य किया है, इसके लिए वे सचमुच बधाई के पात्र हैं।

ज्ञात हुआ है कि बिहार शासन द्वारा स्थापित "भोजपुरी-अकादमी" ईस ग्रन्थ का प्रकाशन करने जा रही है। हमारा विश्वास है कि इस कार्य से अकादमी की यशोवृद्धि होगी तथा निश्चय ही इस "बौद्धायन-महाकाव्य" से लोक-कल्याण सिद्ध होगा।

रामशङ्कर त्रिपाठी
अध्यक्ष-बौद्धदर्शन विभाग
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय
वाराणसी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'बउधायग'–भोजपुरी का अमर महाकाव्य

बुद्ध का व्यक्तित्व दुनियाँ के महानतम व्यक्तित्वों में भी ऊँचा है। उनके उपदेशों का प्रभाव सम्पूर्णमानव जाति पर पड़ा है। ईसापूर्व छठी शती से लेकर १२ वीं शती तक के बुद्ध के विचारों के प्रचार का भोजपुरी में पद्यात्मक रूप भोजपुर की जनता के लिए एक नया रामायण है। बुद्ध का व्यक्तित्व उनके उदार विचारों के कारण दुनियाँ को एक सार्वभौम धर्म देता है। भोज-पुरी भाषा का व्यक्तित्व भी सार्वभौम है। यह भारत के करीब १० करोड़ लोगों में तो बोली ही जाती है, विदेशों में भी करोड़ों की संख्या में इस भाषा के बोलने वाले हैं। इस प्रकार भोजपुर के इस महान सपूत की, उसकी भाषा में गाथा उसके उदात्त चरित्र को और उदार बनायेगी।

इस बौद्धायन काव्य के रचयिता स्वामी विमलानन्द सरस्वती जी सही अर्थों में वेदान्ती है। उनका विचार, उनका आचार, उनकी कृति, भाषा, विषय तथा भाव कहीं भी स्वपरभाव के भेद से शून्य तथा तथ्यात्मक है, साथ ही, इनका हृदय साहित्यिक भावों से परिपूर्ण है। इस प्रकार स्वामी जी के इस 'बौद्धायन' की रचना से एक नये व्यक्तित्व का आभास मिल रहा है, जो सम्पूर्ण मानव-समाज के लिए प्रेरक है, साथ ही अनुकरणीय भी। स्वामी जी के विचार एवं उनका जीवन भारत की धर्मनिरपेक्षता का चूड़ान्त निदर्शन है। ऐसे व्यक्तित्वों की संरचना एवं विकास की कामना के साथ आशा करता हूँ कि भोजपुरी भाषा के इस अमर महाकाव्य से अन्य भाषाओं के कवियों को भी प्रेरणा मिलेगी।

राधेश्यामधर द्विवेदी
प्राध्यापक तुलनात्मक दर्शन
सं० संस्कृत विश्वविद्यालय,
वाराणसी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महाकाव्य 'बौधायन' अश्वघोष और आर्नाल्ड की रचनाओं के समकक्ष

दण्डी स्वामी श्री विमलानन्द सरस्वती के भोजपुरी महाकाव्य 'बौधायन' के अंश सुनने को मिले। सुनकर हार्दिक प्रसन्नता हुई। इसे महाकाव्य न कह कर पद्य बद्ध बौद्धधर्म के विकास और प्रसार का इतिहास कहना उपयुक्त होगा, इसकी भाषा इतनी सहज और सरल हैं कि सामान्य भोजपुरी भाषी भी उसे समझ सकेगा। स्वामी जी ने इसकी रचना में मुहावरायुक्त भाषा का प्रयोग किया है। बुद्ध चरित्र वाला अंश अश्वघोष और अर्नाल्ड की रचनाओं के समकक्ष रखा जा सकता है। उनका यह वृहद इतिहास काव्य भोजपुरी की श्री वृद्धि करेगा और लोकप्रिय होगा। इस रचना के लिये उन्हे बधाई।

डा० परमेश्वरी लाल गुप्त

अनरेरी फेलो रोयायल न्यू मेस्मेटिक-सोसाइटी
एवं न्यूमेस्मेटिक सोसाइटी आफ इण्डिया।

※

भोजपुरी कऽ बहुत बड़ी उपलब्धि-'बउधायन

भोजपुरी भाषा का यह सौभाग्य है कि दण्डो स्वामी श्री विमलानन्द सरस्वती ने 'बउधायन' की रचना कर भोजपुरी को एक विशाल महाकाव्य प्रदान किया है। व्यक्तिगत रूप से मैं इस महाकाव्य का रसास्वादन स्वयं स्वामी जी के मुखार विन्दु से (माघ मेला) त्रिवेणी के तट पर कर चुका हूं। 'बउधायन' के माध्यम से हमें सत्य, अहिंसा का भलीभाँति ज्ञान होता है। भगवान बुद्ध का संदेश जो पूरे पूर्वोत्तर एशिया में फैल कर एक धर्म का रूप ले चुका है हमें भी जीवन जीने की प्रेरणा देता है। किन्तु हमारे ही देश में, हमारे ही क्षेत्र में कितने लोग इससे परिचित हैं, यह सर्वविदित है। स्वामी-विमलानन्द जी ने अथक प्रयास कर भोजपुरी में इस महान ग्रंथ की रचना की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है जो भोजपुरी साहित्य के लिये बहुत बड़ी उपलब्धि है भोजपुरी जगत इनका सदैव ऋणी रहेगा। इस महाग्रन्थ में स्वामी जी ने रस, अलंकार एवं अनुप्रास का बड़ा ही सुन्दर समन्वय किया है।

आज के युग में जब कि भोजपुरी साहित्य की श्रीवृद्धि में हम सभी जी जान से जुटे हुए हैं, स्वामी जी ने कोष का एक बहुत बड़ा अंश पूरा कर दिया है। इतना बड़ा ग्रन्थ अभी तक भोजपुरी में प्रकाशित ही नहीं था जिस पर हम गर्व कर सकें। एक छोटा मोटा साहित्यकार होने के नाते मैं अपनी ओर से तथा तमाम उन सभी भोजपुरी के छोटे बड़े साहित्यकारों की ओर से साधुवाद देता हूँ और आशा करता हूँ कि स्वामी जी अपने जीवन के अन्तिमकाल तक माँ भोजपुरी की सेवा करते रहेंगे।

—भोलानाथ गहमरी

'बौद्धायन'—भोजपुरी भाषा आ संस्कृति के अमर कृति

स्वामी जी के लिखल पुस्तक पर हम सम्मति लिखीं? ई त सूरुज के दीपक देखावल कहाई। बाकी ईहो ओतने साच बा कि भगत लोग सूरुज के दीपक देखइबे करे ले।

एह पुस्तक पर हम अतने कहि सकी ले कि स्वामी जी के तपस्या के साक्षात् रूप 'बौद्धायन' हमन का संस्कृति आ भाषा प्रकाश पुंज बा, जेकरा से भोजपुरी-साहित्य-समाज हरदम उजियार रही। परिव्राजक स्वामी विमलानन्द सरस्वती जी के भोजपुरी-प्रेम के नइखे जानत? भोजपुरी भाषा आ विषय दूनों प स्वामी जी का कलमि कऽ कमाल देखते बनता। 'बौद्धायन' सही माने में भोजपुरी भाषा के अमर कृति बा। एह ग्रन्थ के प्रकाशित कइके भोजपुरी अकादमी गौरवान्वित होई। अकादमी जब एह महाकाव्य के छपवा के सामने ला देई, तब देखबि एकर चर्चा। भोजपुरी क्षेत्र का हरकण्ठ में ई आ बसी।

शिव शंकर पाण्डेय
महामंत्री
विश्व-भोजपुरी साहित्य-सम्मेलन
सदस्य-भोजपुरी अकादमी
भोजपुरी विद्यापीठ
पीरमुहानी—पटना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महाकाव्य 'बउधायन'--युग चेतना क प्रतिबिम्ब

'बौद्धायन' महाकाव्य दण्डी स्वामी विमलानन्द जी सरस्वती के अथक प्रयत्न के एगो सुन्दर 'सुघर' सजल आ सजग प्रतिफल हऽ। स्वामी जी सुभाव से सहज, सरल आ वीतराग परिव्राजक हउवीं, ओही के प्रतिविम्ब 'बौद्धायन' में पूरमपूर उतरि आइल बा। ई कृति खाली महाकाव्य ना हऽ बलिक ई एगो युगीन समाज, संस्कृति, सभ्यता आ चेतना के प्रतिबिम्ब हऽ। मनस्तत्व के उर्ध्व-गमन रूप के विवेचन हऽ। सहस्त्रार के सूक्ष्मदर्शन के अंकन हऽ। एही से एकरा निरमान में स्वामी जी के अपना साधना के एक युग समर्पित करे के परल बा।

'तर्क' में भगवान बुद्ध सबसे आगे हउवँन, एह बात के हमार वेदान्त भी माने ला। आ एकरा से ऊहो आपन हाथ बढ़ा के मेल करे ला। बौद्धन के तर्क अकाट्य हऽ। इहे कारन बा कि हिन्दू धर्म 'बुद्ध' के एगो अवतार मानि के उनका सिद्धान्तन के अपनवलसि। बुद्ध के सत्य अहिंसा, करुणा, प्रेम आदि के निखरल ज्योति बौद्धायन में देखे के मिलति बा।

'बौद्धायन' का रचना में कृतिकार के परिश्रम केतना सराहनीय (श्लाध्य) बा, एकर पता यह कृति के भारी भरकम, गूढ़ बाकी सभा खातिर सुलभ, सरल बरनन से निकहन उजागर होता। एतना गूढ़ विषय के भोजपुरी भाषा का माध्यम से प्रगट कइल साधारन काम नइँखे। स्वामी जी एकरा सङे-संङे, आपन आ भोजपुरी भाषा के एगो प्रतिमान प्रस्थापित कइ दिहलीं। माटी का बोली में एतना बड़हन महाकाव्य के रचना आ गूढ़ गम्भीर विषयन के विवेचन, ऊहो अतुकान्त छन्दन में स्वामी जी अइसन मनीषी विद्वान आ लगन के धनिये के वश के बाति ह ऽ।

एह कृति से मात्र भोजपुरी भाषा गौरवान्वित ना भइल बलिक हिन्दि ओ के भण्डार के श्रीवृद्धि भइल। हमरा पूरा आशा बा कि ई रचना एतना लोक-प्रिय होई कि एकर अनुवाद जल्दिए दोसरा-दोसरा भषन में करे के प्रयास होई। एह अमूल्य कृति का उपलक्ष में कृतिकार के शतशः अभिनन्दन।

—डा० लक्ष्मी शंकर त्रिवेदी
स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी
राष्ट्रपति पुरस्कार
प्राप्तकर्ता
'साहित्य रत्न'
एम० ए० एल० टी०
पी० एच० डी०
पत्रकार

कार्तिक पूर्णिमा
गुरुनानक जयंती
सं० २०३७ वि०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'बउधायन' में काव्य एवं दर्शन की विमल छटा

कीरति है जिन कवियों की इस जग बीच,
उनमें ही एक कड़ी और जुड़ आई है।
संगम मनोहर हुआ है 'बउधायन' में
दर्शन की, काव्य की विमल छटा छाई है।
दण्डी विमलानन्द सरस्वती की रससिद्ध
देख कविताई मन उक्ति यही भाई है।
'दण्डी' ने उठाया दण्ड यह तो है सत्य किन्तु
साथ ही सरस्वती ने कलम उठाई है।

भोजपुरी को कहाँ खतरा जब
ऐसे समर्थ खड़े रखवाले।
दर्शन-ज्ञान में, छन्द-विधान में,
हो जिसका मन आ के मिला ले।
प्रश्न अनेक हैं साहित्य शास्त्र के,
ये किसके किये जायँ हवाले।
उत्तर ले के अकेले खड़े,
विमलानन्द जी 'बउधायन' वाले।

चन्द्रशेखर मिश्र
अस्सी वाराणसी

'बौद्धायन'—संस्कृतिकऽ अमरकथा

अमर कथा अनुपम लिखलीं ई, सुरसति विमलानन्द।
जे पढ़िके सुनि के पइहें सभ, बुधजन परमानन्द॥
गाँव-गाँव घर-घर में एकर, होई सतत प्रचार।
बालक-वृद्ध--युवा सभ पढ़िहें, गइहें गावनिहार॥
महाकाव्य ई बुद्धदेव के,
पावन चरित अपार।
भारत ही ना आदर पाई,
सात समुन्दर पार॥

रामवचन द्विवेदी 'अरविन्द'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी महाकाव्य बउधायन' भोजपुरी गौरव स्तम्भ

भोजपुरी महाकाव्य 'बउधायन', बुद्ध एवं बौद्धकालीन भारतीय समाज; संस्कृति, विपुल ज्ञान-साधना तथा बौद्ध दर्शन की गौरवमय उपलब्धि है। अतुकान्त स्वच्छन्द छन्दों में आबद्ध सभी काव्य गुणों से परिपूर्ण एवं अलंकृत इकतीस सर्गों के इस महाकाव्य में बौद्ध दर्शन एवं धर्म के प्रवर्त्तक भोजपुरी क्षेत्र के युग-पुरुष भगवान बुद्ध के महाभिनिष्क्रमण से प्रारंभ कर दार्शनिक तत्व-बोध को विकासमान भोजपुरी भाषा की सहज शब्दावलि में रूपायित कर देने का काव्य कौशल भोजपुरी के यशस्वी मनीषी स्वामी विमलानन्द सरस्वती को छोड़कर किसी अन्य भोजपुरी कवि में दृष्टिगोचर नहीं होता। महाकाव्य की परंपरागत शास्त्रीय परिभाषा के अनुरूप भोजपुरी में केवल 'बउधायन' अकेला गौरव-स्तम्भ की तरह खड़ा है, जिसमें भोजपुरी भाषा, समाज, दर्शन, परिवेश एवं चेतना आदि स्पष्टतया उजागर है।

नगेन्द्र प्रसाद सिंह
संपादक
भोजपुरी उचार
लोग प्रकाशन, जयदुर्गा प्रेस
नया टोला, पटना—४

भोजपुरी भाषा की क्षमता का विमल ध्वज

भोजपुरी साहित्य के गौरव सुकवि शिरोमणि दण्डी स्वामी विमलानन्द जी की सरस्वती की एकादश वर्षीय साधना का सुफल 'बौद्धायन' भोजपुरी साहित्य का एक अभूतपूर्व प्रकाशन है। इकतीस सर्गों के इस विशाल महाकाव्य में भगवान बुद्ध और बौद्धकालीन भारत की गौरवगाथा को कथा बनाकर बौद्ध-धर्मदर्शन-संस्कृति को प्राञ्जल, प्रसन्न, मधुर, काव्य-रस-सिक्त भाषा में रूपायित किया गया है। यह खाँटी भोजपुरी भाषा के भावाभिव्यंजन की क्षमता का विजयध्वज है और भारतीय वाङ्मय की गरिमा है। सन्देह नहीं कि ऐसी उपलब्धियों के लिये शताब्दियों पर्यन्त प्रतीक्षा करनी पड़ती है।

प्राध्यापक 'अचल'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'बउधायन' द्वारा दिग्भ्रमित समाजको दिशा निर्देश (प्रकाशन पूर्व-सम्मति)

यह एक विचित्र संयोग है कि किसी समय समृद्ध भाषा के रूप से प्रचलित ब्रजी और अवधि आज 'बोली' बनकर रह गयी है। इसके विपरीत पुराकाल से उपेक्षित भोजपुरी धीरे-धीरे 'बोली' भाषा बन गयी है। भोजपुरी भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने में वर्तमान काल के जिन रचनाकारों का विशिष्ट योगदान है, उनमें पूज्य स्वामी विमलानन्द सरस्वती का नाम अग्रगण्य है। इन्हें भोजपुरी का प्रथम कहानीकार होने का गौरव प्राप्त है। भोजपुरी भाषा की मुहावरेदानी और भोजपुरी क्षेत्र के जीवन के वैशिष्टय को इन्होंने अपनी कहानियों में बहुत सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है। पिछले पच्चीस,तीस वर्षों से स्वामी जी निरंतर भोजपुरी साहित्य की भी वृद्धि में निरत हैं। सन्यासी होकर भी वे मातृभाषा की सेवा का पावन कार्य करते आ रहे हैं। उनके जीवन से हमें प्रेरणा लेनी चाहिए। स्वामी जी को साहित्यिक प्रतिभा का लाभ पाकर भोजपुरी-क्षेत्र धन्य हुआ है।

अनेक वर्षों के प्रगाढ मनन-चिन्तन को उन्होंने स्वरचित महाकाव्य 'बउधायन' में प्रस्तुत किया है। इस महाकाव्य में स्वामी जी ने बौद्धधर्म के दर्शन को अनन्त सहज एवं सरल ढंग से भोजपुरी में उतारा है। इसके साथ ही उन्होंने बौद्ध धर्म के प्रचार प्रसार का बहुत रोचक शैली में वर्णन किया है। इस महाकाव्य का वैशिष्टय यह भी है कि इसमें भगवान् बुद्ध के जीवन को भोजपुरी में प्रथम बार समग्रता में प्रस्तुत किया गया है। आज के दिग्भ्रमित समाज को इस महाकाव्य के माध्यम से स्वामी जी ने दिशा निर्देश करने का स्तुत्य कार्य किया है। यह दृढ़ता पूर्वक कहा जा सकता है कि पूज्य स्वामी विमलानन्द सरस्वती रचित 'बउधायन' भोजपुरी में ठिकाने का प्रथम महाकाव्य है। इस महाकाव्य को लेकर भोजपुरी आधुनिक भाषा-साहित्य की पंक्ति में गौरवपूर्वक खड़ी हो सकती है।

मुझे प्रसन्नता है कि 'बउधायन' का प्रकाशन भोजपुरी अकादमी पटना से हो रहा है। इस उत्तम कार्य के लिए मैं अकादमी को बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि इस महाकाव्य की छपाई इसकी गरिमा के अनुकूल होगी। ग्रन्थ की उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा है। विस्तृत समीक्षा लिखूँगा। आज बस पूज्य स्वामी जी के श्रीचरणों में नतसिर हो यही कहता हूँ—

"'बउधायन' रचकर दिया सबको परमानन्द।
भोजपुरी जन-मन बसे; स्वामी विमलानन्द ॥"

—विजय 'बलियाटिक'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी के अश्वघोष : विमलानन्दजी और उनका महाकाव्य 'बउधायन'

—प्रो० रामचन्द्र शर्मा

दण्डी स्वामी विमलानन्द सरस्वती के कृति कार्य से मेरा प्रथम परिचय १९५४ में हुआ जब से ब्रह्मलीन स्वामी सहजानन्द सरस्वती द्वारा संस्थापित श्री सीतारामाश्रय विहटा पटना में संस्कृत का छात्र था। सन्यास ग्रहण से पूर्व 'सुमन' उपनाम से प्रकाशित स्वामी जी के कथा संग्रह 'जेहाल कऽ सनदि' ने अपने भाषा सौन्दर्य और भावा व्यक्ति द्वारा मेरे चित्त को मोह लिया। उस समय विश्वास ही नहीं होता था कि किसी लोक भाषा में इतनी सुन्दर और सरस रचना प्रस्तुत की जा सकती है। पाटलिपुत्र में लोकगीतों को सुनते-सुनते मेरी यह धारणा क्रमशः क्षीण होती गई। इसी बीच महाकवि राजशेखर कृत 'कर्पूरमंजरी' नामक सट्टक पढ़ने का सुअवसर मिला। प्राकृत भाषा में निवद्ध इसी कृति ने अपने अकृत्रिम सौन्दर्य से मुझे अभिभूत किया। प्राकृत (लोकभाषा) की प्रशंसा करते हुए उसमें लिखा हैं—

सरलाः संस्कृत बन्धाः
प्राकृत बन्धोऽपि भवति सुकुमारः।
पुरुषं महिलानां यावदन्तरं
तावन्मात्र मिहापि ॥

इसका अभिप्राय है कि संस्कृत की रचनाएं तो सुन्दर होती ही हैं, प्राकृत की रचनाएं और भी सुन्दर होती हैं। सौन्दर्य और सौकुमार्य की दृष्टि से पुरुषों और स्त्रियों में जो अन्तर है वही अन्तर संस्कृत और प्राकृत में भी है।

वचपन में ही श्री सीतारामाश्रम में लोगों द्वारा नितान्त उपेक्षित अवस्था में रखे गये स्वामी सहजानन्द सरस्वती के कागज पत्रों के बीच कुछ डायरियाँ; कुछ लेखों की पांण्डुलिपियाँ तथा पुस्तक के एक गट्टर में बँधी मिलीं। यह सामग्री महा पण्डित राहुल सांकृत्यायन, सुमन तथा नागार्जुन से जुड़ी थीं। लिखित सामग्री और पुस्तकों का सम्बन्ध बौद्ध धर्म तथा साम्यवाद से था। मुझे ऐसा लगा कि स्वर्गीय स्वामी जी के साथ यह त्रयी कहीं जेल में रही है और किसी संयोगवश बिहार पहुंच गयी हैं। यह भी की यह चतुष्टयी ही साम्यवाद से जुड़ी है और एक ही पथ का पथिक है। क्रमशः यह धारणा पुष्ट होती गई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्मवतः १९५८ में मैंने बक्सर में स्वामी विमलानन्द सरस्वती के मुख से 'बउघायन' के कुछ अंश सुने थे। तब तक वह बौद्ध लीलाः की ही स्थिति में रहा होगा। स्वामी जी बड़ी ही सरल, सरस और सहज भोजपुरी में अपनी बातें सुना रहे थे। उन्होंने स्वामी सहजानन्द सरस्वती तथा किसान सभी से जुड़े कुछ मार्मिक संस्मरण भी सुनाए थे। मुझे अच्छी तरह याद है स्वामी जी की आँखे छलछला आई थीं। चतुरी चाचा के शब्दों में 'सुभाव से बौद्ध, कर्म से दण्डी, देहि से दूवर आ दिमाग से घमघूसर, लोक से संन्यासी-विरागी बाकिर लोक भाषा के अनुरागी, स्वामी जी के ज्ञान अभिव्यक्ति, संन्यास और अस्थिमात्रावशेष कलेवर के समन्वित प्रभाव के परिणाम स्वरूप गुरु गोरख नाथ की यह उक्ति मन में गूँज उठी—

'खड़खड़ काया निर्मल नेत :
भई रे पूता गुरु सों भेंट ॥

तब से मात्र मानसिक शान्ति की प्राप्ति के लिए राज गुरु मठ शिवाला घाट में उनसे मिलता रहा हूं। इस बार दर्शन में जब मालूम हुआ कि 'बउघायन' का प्रकाशन हो रहा है तो प्रसन्नता के मारे दिल बाँसों उछल पड़ा।

लोक भाषाओं के प्रति विभिन्न दृष्टियों से मेरी घारणा बहुत निम्न रही है वह क्रमशः बदलती गई है। 'बउघायन' की रचना ने उसे आमूल परिवर्तित कर दिया है। सप्ततालच्छेदन के बाद जैसे सुग्रीव को राम के बालि-वध में विश्वास हो गया था वैसे ही 'बउधायन' के प्रणयन के बाद मुझ में भोज-पुरी की क्षमता और भविष्य के प्रति आस्था जग गई है। लगता है 'बउधायन' के रूप में हमें भोजपुरी के सर्व प्रभुता सम्पम्न होने का प्रमाण पत्र ही मिल गया है।

महाकवि अश्वघोष ने गौतम बुद्ध के जीवन और दर्शन को 'सारिपुत्र प्रकरणम्' नामक रूपक तथा 'सौन्दर नन्दम्' एवं 'बुद्ध चरितम्' नामक महा-काव्यों में लिपि बद्ध किया। 'सौन्दरनन्दम्' में १८ तथा 'बुद्ध चरितम्' में २८ सर्ग हैं। धर्म एवं दर्शन जैसे नीरस विषय को—बौद्ध दर्शन के विभिन्न सम्प्रदायों को काव्य की भाषा में प्रस्तुत करना बड़ा ही जटिल कार्य था। अश्वघोष ने इस कार्य को बड़ी ही कुशलता से सम्पन्न किया। धर्म दर्शन के प्रचार के लिए लिखी गई उनकी कविता रस की निर्झरिणी है। वे महाकवि बाल्मीकि, व्यास, भास और कालिदास की परम्परा के सुकुमार मार्गी कवि माने जाते हैं। अपनी रचना का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए उन्होंन स्वयं ही लिखा है—

इत्येषा व्युपशान्तये न रतये मोक्षार्थं गर्भा कृतिः
श्रोतृणां ग्रहणार्थमन्यमनसां काव्योपचारात्कृता।
यन्मोक्षात्कृतमन्यदेव हि मया तुत्काव्यधर्मोत्कृतं
पातुं तिक्तमिवौषधं मधु हृदांतंयु कथं स्यादिति ॥

अर्थात् मुक्ति तत्त्व से गर्भित इस कृति की रचना मैंने सांसारिक भोग की प्राप्ति के लिए नहीं बल्कि शाश्वत शान्ति की उपलब्धि के लिए की है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिन श्रोताओं का मन मोक्ष की बातें पसन्द नहीं करता उन्हें मोक्ष में रुचि उत्पन्न हो इसलिए इसे काव्य रूप दिया है। मोक्ष से भिन्न जो भी बात आई है वह काव्यत्व की पूर्ति के लिए रखनी पड़ी है। दर्शन को काव्य का रूप देकर मैंने कोशिश की है कि तीती दवा को पीने के लिए मधुर और सुस्वादु बना दूं।

जैसे कृष्ण चरित को और भी प्रभावकारी बनाने के लिए व्यास सूर के रूप में उत्पन्न हुए और राम कथा को समयोपयोगी रूप देने के लिए वाल्मीकि तुलसीदास बने, लगता है उसी तरह बुद्ध के जीवन धर्म एवं दर्शन को जनजीवन की भाषा में बाँधने के लिए तथा बौद्ध धर्म के अद्यावधि प्रचार-प्रसार को अभिव्यक्ति देने के लिए महाकवि अश्वघोष स्वामी विमलानन्द सरस्वती के रूप में हमारे बीच उपस्थित हैं। उन्होंने २८ सर्ग के बुद्ध चरित को ३१ सर्गात्मक 'बउधायन' में बाँधा है—अविद्या-व्याधि-नाशन कटुकौषधि तुल्य धर्म और दर्शन को अविवेक गदा पहारी आह्लाद प्रद एवं अमृत सन्निभ काव्य का रूप दिया है।

अवध में जन्म ग्रहण करने वाले भगवान् राम की कथा अवधी में लिखी गई, ब्रज में अवतीर्ण श्रीकृष्ण का कथामृत व्रजभाषा में निबद् था। कितने आनन्द का विषय है कि स्वामी विमलानन्द सरस्वती की कृपा से भोजपुरी क्षेत्र में गृहीत जन्म और दशाव तारों में एक माने जाने वाले गौतम बुद्ध की पावन चरितावली आज हमें भोजपुरी में देखने को मिल रही है।

'बउधायन' स्वामीजी के अध्ययन, मनन और अनुभव के क्षीर से सिंचित पुष्पित पल्लवित जीवन-तरु का परिणत फल है—बौद्धधर्म एवं दर्शन का आकार ग्रन्थ है—'यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्'

काव्य वैभव की दृष्टि से 'बउधायन' कवि की 'गम्भीर' धीर कविता विन्ध्याटवी चातुरी संचारी कवि कुम्भि कुम्भ भिदुरः पंचाननः स्वामिनः' कहने के लिए विवश करता है।

कमल गन्ध और सौन्दर्य का निधान है परन्तु सूर्य जब तक अपनी किरणों से उसे खिलाता नहीं तब तक उसकी सुरभि और सौन्दर्य का सुख समाज को मिल नहीं पाता-रवि किरणनु गृहीतानि भवन्ति कमलानि कमलानि-स्वामी विमलानन्द, सरस्वती की इस कृति को यदि समीक्षकों, प्रकाशकों, पुस्तक विक्रेताओं पाठकों तथा अन्य शासकीय अशासकीय प्रचार माध्यमों से उचित प्रोत्साहन मिले तो यह अपने मूल रूप में भी भारत तथा भारत से बाहर रहने वाले आठ करोड़ भोजपुरी भाषियों के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय यश प्राप्त करने में समर्थ होगी। अन्यथा भर्तृहरि के शब्दों में हमें भी कहना होगा—

बोद्धारो मत्सर ग्रस्ताः प्रभवः स्मय दूषिताः।
अबोधोपहताश्चान्ये जीर्णमङ्गे सुभाषितम्॥

रामचन्द्र शर्मा
प्राध्यापक संस्कृत
स्वामी सहजानन्द सरस्वती विद्यापीठ महाविद्यालय
गाजीपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.